

या हो 'द्ये सार्हें दावर वी वाश्वर व्युवा

LATSE LIBRARY NEWSLETTER

ह्ये को २००८ वेदि हें द्वापा FALL 2004



म्रीत्रिम्बेद्धर्भन्ति न्योत्त्र्वर्केशत्येयः

- या से सामानमाना ग्री विद्यान होंना
- = "अर्गे क्लॅरन्स्य" टेशेटेरे।
- ईं अ'लुब'रैट'लुवाब'वाबर'यदे 'ब्रॅस्ट्रोट'वा
- वहस्रान्तुद्रशर्देश्तुःन्दाले के के के स्वीक्ष्य के स्विक्ष के स्वीक्ष के स्वीक्ष्य के स्वीक्ष के स्विक्ष के स्विक्ष के स्वीक्ष के स्विक्ष के स्विक्ष के स्विक्ष के स्विक्ष के स्विक्ष के स्विक्य

GEDUN CHOEPHEL IN NEW YORK

- Stand-Up Comedy at Latse Library
- Ippolito Desideri by Sonam Tsering
- Notes on the New Formalism by Dana Gioia
- INTERVIEW: Jamyang Norbu

नवी वन्तर्केश वसेवा मुका ने वायदे में में वायम हेना



मञ्जात्रुवालीयात्त्रुवालीयात्त्रुवालीयात्त्रुवालीयात्त्रुवालीयात्त्रुवालीयात्त्रुवालीयात्त्रुवालीयात्त्रुवालीयात्त्र्वाण्यात्त्रवाण्यात्त्र्वाण्यात्त्रवाण्यात्त्यात्त्रवाण्यात्त्रवाण्यात्त्रवाण्यात्त्रवाण्यात्त्रवाष्यात्त्रवाष्यात्त्रवाष्यात्त्रवाष्यात्त्रवाष्यात्यात्त्रवाष्यात्त्रवाष्यात्

A watercolor illustration by Gedun Choephel in the Pema Byams Collection. (See related article on p. 11.)

. वार्रे 'दये :बार्टेंद 'विदानी' नाबर वर्षेता

LATSE LIBRARY NEWSLETTER

श्रुं त्रें २००८ त्रेंद्र श्रूंद्र पा

VOLUME II FALL 2004

ल.श्रेत्र.चि.चेचाश.ग्री.वर्षिय.श्रुंच

<u> २वी प्रचेश क्रिश प्रचेश की में श्री मंदी स्राप्त क्रिया श</u>

मूर्षिरवुद्धेल्या है र्या तरिय क्रूबात हात ही ज्यू मिय हु हा रेय विश्वा

ন্নীহ'র্মিঝা

વદઅ'ન્દ્રુદ્રઅ'ર્ફેસ્તુ'ન્દ્ર'એ'એ'એન્સ્ટ્રેસ્એફ'મફેસ'ગ્રી'નગાવ ર્સેવા

र्रेअयार्थे ब्रीटाया

वेंद्र यद्वीय धैवा वी क्षेत्र य यें। REN'SALAIS

विवाधुर हैं अदिव

विरावेंगार्नेवासु से चे राग्नेवावविरा

व्यामुराग्री केंगार्थे।

বর্মির রমশ ক্র'র্মীর বাস্ত্রমন্

र्रेश रेग में यूपा

र्द्धेयात्युयार्रेटात्युवायावायार्याः स्ट्रीटावा इ.य.ह्..ल.लुश.चश्चराश

NEWS FEATURES

EVENTS

Stand-Up Comedy at Latse Library

5 EXHIBITIONS

Gedun Choephel Artists' Guild

CONFERENCE

Gedun Choephel in New York

LITERARY FEATURES

↑ △ INTERVIEW

A Conversation Between Jamyang Norbu and Elliot Sperling

18 FEATURED AUTHOR

Tibetans Writing in English: Jamyang Norbu

9 LITERARY EXCERPT

The Mandala of Sherlock Holmes

HISTORICAL NOTES

Ippolito Desideri by Sonam Tsering

23 LITERARY THEORY

Notes on the New Formalism by Dana Gioia.

वर्शन्यस्य र्वेतार्द्रशाहरावर्गन्या

(याः क्वे 'नये 'अर्हेन 'विन्यती 'ग्रांचर विदेव 'वदेने 'व्याक्वे 'नेन 'नवस 'वेंन 'ग्री 'नेवा 'ग्रांबन नये 'अर्हेन 'विन्यं का 'वें 'नेन 'व्याक्वे 'विन्यं का 'व्याक्वे 'विन्यं का 'वें 'नेन 'व्याक्वे 'विन्यं का 'व्याक्वे કેદસ નકૈવા તે રાયે સૂત કું રાસ્કૃષ્ િ યમ રાવદ સેદ વર્ષેત્ર કુશ સે રાત્ર રુષ રોવા વર્ષે વાર્યો કાર્યો સ્થાપ यत्व र्वेषावद्यये में से हैं वायविम्यायम्बर्धेत् यावव्यये विहत्येम येवा

Andrea Soros Colombel FOUNDER AND PRESIDENT Eric Colombel EXECUTIVE ADVISOR Pema Bhum EDITOR-IN-CHIEF Kristina Dy-Liacco NEWS EDITOR Lauran Hartley LITERARY FEATURES EDITOR Sonam Dhargay LAYOUT AND DESIGN

Latse Library Newsletter is published annually by Latse Contemporary Tibetan Cultural Library, 132 Perry Street, Suite 2B, New York, NY 10014 USA Tel.: 212-367-8490 Fax: 212-367-8479. Email: info@latse.org. Contents copyright © unless otherwise noted. Electronic version of this newsletter can be found at www.latse.org. Inside covers original scanned for Latse by Luc Schaedler, Angry Monk Productions.









ला हुराव विवाय ग्री विवाय हूँ वा

ही ज्ञानिकाराम् वार्डे न्ये अर्हेन विस्वकान्येन खुवै वस्वकार्यन वीमा वैयानसुरा वेंद्र क्रीनवेंद्र वेंद्र यात्र क्रीट की यहान सेंद्र यही सावर विवेचेटरा दर वेंद्र भूत वर्देशकान्द्र बेदकान्द्र वेदाला देदावे का होता वा होत्तर विद्यापत विद्य र्वर ग्री नर्वर वेदि मानुस मोट । " लेख परे विषय में ब हुआ। विषय में ब परे निया है व्या शः दशासे तथा परिः तिवितः सूर्वः पायापशः सुद्धः उदा सुवा तसूर्वः त्यापशः दृद्धः सेवा दशसः त्यापशः म्याप्तर्यस्य स्वर्धिता स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स यमार्था पर्वे अप्तान सुन प्रसूत विषय प्रमान स्थाप । ल्ट्रायात्राम्यात्रा वित्ववारायव्यवस्थित्रयात्र्यायय्त्रेत्रवित्रास्य रेकाचेटकान्दर्भे पीत्राधारेत।

[यः, प्रवाशः श्रथः दर्वोद द्वेवैः यामुखः द्वोदः वै वेदः स्थैः यार्लेबः दरः क्षवः याशुखः दरः ह्ये वेद्याशः रेअ'य'र्भेट्र मुं के र्वे मंत्र द्वार सूर हुन यदे रेवा वाबर वी द्वार विवासित। हे है वें रम्बाम्बर्क दुवै दर्भ वामाबर पुरस्केता विकास सम्बर्भ प्रमुक्त दुवै दर्भ वामाबर सम्बर्भ प्रमुक्त दुवै दर्भ वामाबर सम्बर्भ प्रमुक्त सम्बर्भ सम् नमाय इत क्री म्हार्स् वामाधीया युवा विद्वा मेंद्र माय है वहीं में में हि क्री सुवा युवा में वह माय में स्तरादीटा। विटार्क्स्यान्स्टान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान्स्यान् न्वेंन् चेंदे वान्यासीर वी स्टार्स्वायास्य वारा स्टार्य हे चेंन् मी सेवा वाल्र वी सूटार्स्वायास्य च्च चंद्र भंद्र। भ्राप्त विवासीय अस्त्र सम्बद्धा विवासीय स्वीता द्राप्त स्वीता द्राप्त सम्बद्धा विवासीय स्वीता स्व र्। लासर्ने मलिया प्रेर राष्ट्रीय स्त्रा स्त ८८. द्वी. क्वि. त. क्वी. क्व्यं के क्वि. क न्में न चेंदे मानुस हो न में वहन हेंद्र इस म से वह न मोडेग्र से स्वयाद्र म माडेग्र से स्वयाद्र माडेग्र राञ्चेर् होया या क्रुश प्यें प्राप्त वा त्वारा राज्य र वो र चेंद्रे वा तरा क्री र द्वारा स्वारा स्वा क्रुमार्थिन महीन क्रिन्ता भून स्थान र्हेग्रथःश्चेत्यःकेटःपीदा

ली. ह्या. पट मी. येया. यह शासी. यहेष. तसी यहेष. तसी विश्व पट स्था. मुं जय र्यं जयं क्रा क्रिंच मुंधिया मुंदि स्था मुद स्था मुद स्था मुंदि स्था मुद स्था मुंदि स्था मु श्रीमा नुस्रमः त्यम् सम्मित्ते स्त्रे स्त्रू स्त्रे स्त्रे नुस्रम् संस्त्रे स्त्रा स्त

Stand-Up Comedy at Latse Library

In February, Latse Library rang in the Tibetan new year with laughter. For the first time, and on their first visit to America as well, four pioneering Tibetan comedy actors came together to headline Tongue-Lashing! Tibetan Stand-Up Comedy at Latse Library. The performances featured veteran actors Thupten-la and Migmar-la from Lhasa, Passang "Pa" Tsering from India, and Manlha Kyab from Siling (Xining) in Amdo. Apart from Thupten-la and Migmarla, who work as a team, the comedians had never met before, let alone performed together.

Tibetan comedy is a cultural genre that is enjoyed by all ages and all levels of society. A relatively new art form that emerged in the 1970s, by the early 1980s, uniquely Tibetan forms of comedy were being forged. These four actors from different Tibetan areas have developed their own brands of comedy that have become cultural phenomenon in their own right. Few people in Amdo have not heard of Manlha Kyab, just as all Lhasans know the work of Thupten-la and Migmar-la, and the Tibetan community in India that of Pa Tsering. Latse's aim was to present to the audience different forms of comedy performance that are beloved by some, while still unfamiliar to others, a sampling of different styles and artistic directions.

Having appeared on numerous television appearances, video recordings, radio shows, and performances in China and in Europe, Thupten-la and Migmar-la enjoy a strong following not only in Lhasa, but across all Tibetan regions and among the Tibetan diaspora. These veteran actors work as a team, performing skits with role-playing and lively, witty exchange. The New York audience was delighted with their polished, seamless, and humorous performance.

<u> २८ स्रिकुथ क्री वेर स्रोद्धस्य म्री विर प्राप्त प्राप्त प्रमुक्त स्रोद प्राप्त । विर प्राप्त स्राप्त प्राप्त</u> स्रोत्रात्वरायाध्ये स्रोत्रात्वरात्रां क्षेत्रात्रां क्षेत्रात्वरात्रां क्षेत्रात्वरात्रात्वरायः स्रोत्रात्वरा देवु भेंना मी भून के ना दूसका गुरेका विंदा ना हैका गुरे हैंन देंका नाईदा हैदा। भू भागानुका मा

या (या सदसा) के दिया वाषा हो वाह्य हो हो साव हेवा हो साद हैवा है से साद हैवा हो साद हैवा है से साद है से साद हैवा है से साद हैवा है से साद हैवा है से साद है से से साद है से से साद है से साद है से साद वया है। विस्ती विषय सूर्य है ज्या रेष्ट्रीय अपने देवेंदि या प्रमानी विषय सूर्य स्टर सर्दरमा विरामीमामा रेपा । तीमाममामा विरामीमामामामामा चर्डे चर्केच तर्द चूर चिष्य र ट हुर हु ले चिष्य चर्रा चुरा किर चीत्रचार स्थाय त्या न र्वे क्षेट्रा यक्षे देट व्यवास ग्री व्यवचळं सुट ग्रावास उत् लेवा है "मेंट्र प्येवा वी वासवा होट्र कैंग्युद्रासुः (इवास्था) धेःवद्युद्रावुद्रशासेक्षा "बेरावादेः धेकःवा देवे वदार् द्वास्थाः क्रीः द्वेदःखूद्यः दृदः युकः ग्रीःखूद्यः खूवकः वृद्धिः वर्षेयः वर्षेयः वर्षेयाः वीःवायाः वाययः होदः ग्रीः धीवाः বার্বাশ বের্ব স্থির বার্ব ।

श्चरम् अपन्यः व्याप्तान् देशान्यम् विष्यः विष्य कवाश्विद्में देव त्यः वृताश वसूब दृद्ध सुन । सुन स्व दृद्ध से स्व दिहारा विंदिनी विश्वास ग्री मुन क नाय के बहुना धेव त्या देश हो हुस स तान हो ही ही दिन है सास लुब.तर.चन्नभार्स्, लट.चार्ट्रट.ट.वहैचा श्रुष.च.श्रेचन्त्र,थन्न,व्रट्ट.ची,वविच.र्सूब.ची,मासंट.स् सः इस्रयः यान्यस्य क्षेत्रं चार्ते दः सूद्रयः वार्यस्य विवासः वस्त्रः सः दृदः । विदः स्त्रें तः क्षेत्रः चार्यः विवास र्रेन स्वार्ये में व्यापन स्थित योगाय में स्वीत सम्बन्ध विद्यान स्वार में स्थेन सम

यिः त्याकार्याकार्यो द्वेदिः यात्रवास्त्रीयः यो व्यवसः सूर्वेद वदे हैं व्या है दिये वहीं द्वारा द्व इ.इम.र्नु अहूर विराम् मु.कूर्यायाचर लूर्या यी विरयातमाचीमा सु.च. ४ तपु.कूरा. ४७ हैन है। वेंद्रामु वेंपानस्म मुहेन वेंप्रायस्मानायायम्य स्वापानस्करम् व वेंप्रायहरू स्वाप्य सेंबर

र्गे त्युसान्त्री पार्ने तामा के दार्च के दाया में दाया म व्रिट क्रूब रहारहाय विवाध विवास क्रूब क्री वाया वाल्वाब रहे के क्री वाया वाल्वाब रहे के क्रा क्रिया रहा कर कर सूर्याः त्युताः र्दुत्याः क्षीः वासुरः त्यवरः वासरः । देः दयाः विदः द्वसः यः वाद्यो विदः स्थाः यः वाद्यो विदः है के पा भी विस्ती की तें क के पित पति भी सही के पार्क्षित वा के के के स्थेतक करा विवार हैं क याबर व दर्भ भर क्षेत्री तेब या येवका बका दे यावे चेद यावे क्षेत्री केंग्रावा या यावा चे के याबर । श्चर मुनुम्मानसः नृदायात्रे सेदायात्रायात्रे सात्री सात्रायाः सात्री सी सी नृदासी सात्री सी सी मान्यायाः यध्यात्रेचराज्ञीशाच्यवनर्श्वेदान्दा। याळे सेदायात्रास्त्राचारान्यायेतार्थेदायार्थेदायार्थेदायार्थेदायार्थेदाया विभाषार्श्वेरमा वेर्भवहिक्षेत्री वार्वेरही अवस्य स्वर्भेभक्षेत्री वेरते व्यवती

Pa (Passang) Tsering's performance is more earthy by contrast. With a style that is similar to western stand-up comedy acts, Pa Tsering entertains his audience with jokes, impressions, gestures, imitations of women, and his own takes on popular Tibetan and Hindi songs. One of his most popular acts is his "Tibetan Alphabet: The Original Kungfu" routine, where he combines martial arts and body contortions to mimic each letter of the Tibetan alphabet.

Manlha Kyab, who hails from Amdo, offers a more subdued performance. Satire and social commentary play a major role in his comedy which more often leads one to reflect rather than to laugh. Manlha Kyab asserts that if he cannot teach his audience to think differently about something, to educate them in some way, then his work is not successful.

The events, held at Latse Library, were free and open to the public. Enthusiastic fans crowded the library conference room for these rare performances. On Losar weekend, February 21, all four comedians appeared in one show. Each act then had their own shows during the following week.

The group was also invited to speak at Columbia University, where each actor talked about his background and the development of regional and personal styles. The four then traveled to Charlottesville, Virginia, for a performance at the University of Virginia, and to Boston to give a show for the local Tibetan community there. Manlha Kyab and Pa Tsering gave a show in Minneapolis while Pa Tsering went on to give performances in Chicago, Los Angeles, Colorado, San Francisco, Portland, and Seattle before returning to India.

> (विक्तिप्रदेशियाद्देशियुः) वदायम्। মান্ত্ৰ স্ক্ৰীপ্ৰ মান্ত্ৰীপ ধ্বিব:বন্ধুব:অবাধা মুঘা.২প্রস:জবারু। त.(त.४८४.)ष्ट्र.५८.जयोश য়ৢঀ৾য়ৣয়য়য়৻য়য়য়

Photo opposite page: (from left to right) Thupten-la, Migmar-la, Pa Tsering, and Manlha Kyab.

स्रावरा परे म्यूट चत्र ग्री यश रेसा

वर्ने मा द्रमे अर्हेद । यद मी अविश्व यदे मा शुद चत्र दृ मी वश्व रें अर्द । यद द्रभे मा स्थाप यामयायाम्यान्यान्यावदेवल्या देयायाळे देटाप्तार्या (अविः नावयः र्द्या दिया दिया क्रिया क्रिया वार्षिय पर्देव चिर्या नर चेवि वर वा वर्गेन चेन्।) व्यवाया दशः २००२ वेदिःसुः तुः पडियापरः स्टः हेद्राः सूदः स्याः ध्वापशः र्रोताः पादरः। क्षेत्र अल्ट्र तर् र्वेट् र्वेट् अर्थे क्षेत्र क्षेत्र वा अर्थ क्षेत्र वा विद्या विद्य र्ट्सीट्रंट्रचर्ची,वर्चेलाची, खेश्रातद्राचर्थंट्रचर्थंट्रचर्चा ५००० जुटुः है.के. नवै केंबा २७ हेद वर्षे मान्ये अर्हेन वर्षे कर्षे में वर्षे केंद्र के मान्ये करें श्ची र्द्धेनाथः"वर्त्त् म्रीटः र्द्धेनाथ यत् लिना वस्रात्या वर्त्ते म्रीटः देराये छे बाव प्रेरीयाः र्वेटरक्षे. द्रयात्रार्श्चर मांक्ष्य अपूर्व स्थित स्थित स्थाप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत ब भेर पद बुद मुद्र की देवा बाद की बोव को केंद्र चै व्येट व प्येट पर्वे अर्के क्षेत्र के देवाब क्षेत्र वा केत्र सेंवे चेंट देवाय बेच वहवा व्यक्ष सुद्रका ग्री व्यवह वहें दे सामी द की दवा वी र्सेच मुळे दे से दिवा मी र्चन रेमा पदे से र्क मी वुस रेक रित्त वी मार्क रेक मी मार्क रेक मी

Lecture Series

Our ongoing lecture series also featured some interesting guests. Tsering Wangmo Dhompa (featured in Latse Library Newsletter, Vol. 1, No. 1) gave a poetry reading in September 2003. Tsering Dorje Drongbu, of the Tibet Academy of Social Sciences in Lhasa, gave a talk entitled "Lhalung Paldor: His Life and Relationship to Lang Darma" in May 2004. On May 31, the library hosted a roundtable discussion "Adapting Tibetan Studies Programs for Contemporary Society," where participants **Sherab Nyima**, Vice President of the Central Nationalities University in Beijing, Gazang Caidan, Head of the Tibetan Studies Institute, Northwest Nationalities University in Lanzhou, and Dan Zheng, Director of the Tibetan Studies Research Center, Qinghai Nationalities Institute, Xining, spoke about the evolution of Tibetan Studies departments and institutes in China.



र्दे हे य सरस यम्स ग्री रे से हुट व्या दिसा सुम

5'ઑઉ'ર્ફીક્'માંવર્ક' માંકલે અર્દિક્ સમાર્ક્ક હ્યા અર્કે સ્થારે સે એ માં મહિંદ્ર સ્ને અર્કે દ્વારા અર અ लचाराक्री में मुंदर्भरायदेशरा स्वापा दीरा है त्वीरारा सूर्य दीरा। ववीरारा सूर्य दीरा यत रे के रे र्ना न में भे भे था यन हों न मुं के न के न रे के या दे ते रे के मार अपने र के न में वर्षोत्रकाः र्हेद पुकार्येद याने व्यकावदेवकाः स्त्रीता पुका के से से दे प्ता वका सर्देद स्वर के न के खेट देंन ने का क्षेत्र नुवान नुका सके चटा ना के के खें किना धोका

न्गो वन्त केंश वयेवा ही में संदेश सहुत केंगाश

वर्रे मान्ये अर्हेन विराद्या निया क्यान्यो वर्षे अर्थे वर्षे श्रीयः (यात्रसः र्क्यः होयः क्रुसः यर्देतः बेटसः यदेवे : तर्दः यासया।) स्नयस। टः र्के : यः यूःसः दशःगर्दिदःस्रेशः रेःस्रें यःस्रें र देवा दशः यहरः यरे योगा यसे द देवा यहें र। न्यायीशास्त्रसायन्त्रेयायीशार्थान्दे र्थासून याने स्थापनीसरास्त्रीत वितायासरायनेन चुर्यायदे सेटायान्यो यन्त्र केंग्राययेयाची में केंग्यदे सम्बन्धे केंग्यालेयानम्यायन्य रयो.वर्षे १.क्षुवा.वर्षावा.वर्षा.वर्षा.वर्षा.क्षु.वर्षा.वर्षा.वर्ष्य.चयु.सू.वर्षा.वर विंदार्द्धेशःगुद्दादेदःस्वर्थार्वेदःगुःसुव्याद्गःगुद्दावदेःस्रावर्थाःसःददःसुः द्ववादाःवदेःव्यर्थाःवस्यः क्षें क्रें ५ दे त्वीय्रयः क्षें द्वावर वर्दे वर्द्वायः विरा दे र दे या वीद्यात्र विरास्त्र या च्र-मुंअर्घर बर्ग यानर तम्मन अस्ति दिया मुंजिय प्राप्त का यानर हूँ भ येश लूरी

रे ऑपने न्या योश <u>व</u>्चें र ब्रिस बेतु : ऑया त्या न्या त्व के अ त्ये व्या की हे अ द्व त्या अ विदार्क्ष विवासी विदार्भ विदार विवा वसुवा वर्दे द होसा देशे यदि सम्बद्ध हैं वाया देवे हें वाया से से से साम से से से से से से से से साम स र्रेशयहर दे वित्र में में बार का नर्र निर्ध महिका की महिना मी कर दे वर्षी न नुका से दा रे से ने नगमी शर्मन से प्रतानि निर्माणित है निर्माणित से स्वानि से सिर्माणित से सिर क्रॅंश दर्भ व मुह्में दर्श पाया क्रेंद्र चनरा नुसा वेदा कर दर्श मारा पर व मही ચોવાયા સ્ત્રું આ તે : વ્રોંદ વ્રિક્ત તેવુ : ખેવા : વા સુરાવાત દારા દંન : તે : તેવો : વર્તુ તે કેંચા વધે વા વ્રો દેયા इक्टर्बिम्रायद्वे:द्रश्रास्त्रक्षक्षक्षक्षाः च्याच्यवस्याः सूर्वाचुर्याः देःवै:द्रमी:यद्वक्षक्षाः यथेयः क्षी हेर द्वार्स्याय प्रतामित्र वे सर्वे सर्वे स्वाय सेव प्रता विदायी स्वाय क्रें दिर यह वेद ५ नामका से ५ नवे सर्वे महिना माहिक मालिया गुर से के हो

रै के दे दमायदे मादये कर्दि । यद द खूर सुरा सु द्युदरा दम्रोसरा दुसा पेदा

रे अं पद अञ्चर केंग्राय देवे राग्री अया केंद्र विराणें राय है सु स्वरे राय केंद्र तुरःक्रे भे क्लें तुरुषः वासुस्रः य भेता Tel: 0891 - 632 - 3825 / email: gedunchoephel3000@yahoo.com).

Dorje Basang: Selected Works

In the spring, Latse hosted a small exhibit of paintings by a young Tibetan painter from Ngaba, Dorje Basang. These pieces were selected from the larger exhibit held at Wesleyan University's Mansfield Freeman Center for East Asian Studies. The highlight of the exhibit was a large bead-embroidered thangka.

Gedun Choephel Artists' Guild

As we made preparations for the Gedun Choephel Centennial Conference (see related article in this issue), we received a message from a group of young artists in Lhasa who earlier that year had formed a cooperative gallery called the Gedun Choephel Artists' Guild. Also in commemoration of the 100th-year anniversary of Gedun Choephel's birth, the artists used Tibet's great modern intellectual and artist as inspiration for a space in which to create art that represents a new and multi-faceted Tibet.

When they heard of the event in New York City, the artists wanted to contribute in some way in marking the event and the centennial. They created an installation work comprised of twelve paintings each by a different guild artist. Each painting depicts with varying degrees of realism expressions of the spirit of Gedun Choephel. The twelve canvases are hung together to form one large work. This extraordinary gift was sent to New York City and was installed in the library in time for the conference. It symbolizes not only a celebration of the life of Gedun Choephel, but also a true reflection of his influence and enduring presence in Tibet today.

The installation will remain on permanent display just outside the library's Reading Room.

The next time you're in Lhasa, visit the artists' gallery located at No. 3, Barkhor Northeast Corner (tel. 0891-632-3825 / email: gedunchoephel3000@yahoo.com).

> (वि.चि.चेर्ट्ज्वार्ट्ज्यु) वड्या नवी वन्द्र केंब्रा वये व्या द्यी के केंद्र वि পর্ব স্থ্রবাধান্ট্রী স্থ্রবাধান্ত্রী ইপরা ग्रीका विरासित सुद्धा र स्थान स्थान सुद्धा लेखा वायार्हेरःश्लेषश्चर्याद्वरहेरःतुन्या तयु.यट्र.तरा

Photo (opposite page): Artists from the Gedun Choephel Artists' Guild pose with their collaborative work before its departure for New York City.



दें दें ता तो दी तावाया दया दवी वर्द केंग वर्ष वा तो वक्की है साद्द कें वाया वर्द वा वर्दे स्रया व्दत्रक्तिं वसेवायम् वात्राम् मेर्टिन द्वेसात्रसार्वे देवम् वर्षे र वदे हेसावार्ये र हिरा बेदुः भंगा मुः स्टत्यः ह्रेशः द्वतः श्री हैं ग्राशः वर्त् लेगा वर्हे ग्राह्य हे स्याद्येत भंतर व विटः स्टर्णः सहसः बिदा नदायदयाया र्श्वेययायाक्तयार्थेदाक्तीचेदा" डेयाददा अदार्वेदायाची "୕ୣ୷ଌୖ୕୷୕ୢୠ୶୕ୡୄ୕୲ଵ୕ୄ୵ୖୖୢଌ୕୶୕୵ୠୖ୲୕୕ୡ୕ୠ୕ୡ୕୶୕ଌୖ୶୰ୡୖଊ୕ୠୣଊ୕୷ଊ୕ୖ୶ୠ୶୴ୡ୕୵୕୵୴୕୵୕୷ୠୢୢୗୡ୕୴୵୕ यशके बिटा वाया शेटा द्राया के वाहिशाया यादश से दार्वेद वीश है पुरावाद ह्या पेटा गुःरेन्। म्यासीन १९८१ वेंस्विस्तेतुः वेंनायनस्वरूपेन्द्रसे वदै वावक्यान है वह लेवा क्षेत्र व्यं प्रेत त्या के त्रात्र हैं वाक्या है न क्षेत्र हैं न विवास है न क्षेत्र हैं

ब दिर है। ज्ञान उपारे वार्य स्वेता ν —्ह नम हेव पास्य है। देवे सिंद [यदः यो अः वेदः ग्री:देदः स्वरूपं ग्री:अवरूपः प्रदः ये द्वो वद्द्वः क्रें अवस्थाः (१९०३—१९४१) लचारा तचित्रात्र राज्येत्र वर्षा सुन् वर्षे वर्षा ता (सुन वर्षे वर्षा स्वरं वर्षे वर ट्रम् क्रियामा प्रत्रेत्रामा स्मानमा । द्यो वर्म् क्रियाचेया याचा मा मिल्यमा हेया द्रमा परास्या अर्द्धेट नदे मूँट विस्त्रेतु र्धेना नीश ननी यन्त्र क्रेंश यथेया यान्य दश नेंद्र सेना यदे र्सेना या चलवा यदेः त्वाश क्रेंद्र वेश ह्रेंवाश हो दक्के वेश क्षेत्र श्रुटा । वेदवाश वर्षे देश के देश हो हो से क्षे.ग्राबल्यायाळ्या.त.त. हेम.चर्च्याचीत्रात.त. वर्चाययार्ख्या चर्चयार्ख्यायाः र्शेवाश्वाचर्गानः श्लीवाञ्चश्वाचेता

मिता रीते ह्या यो त्यो वर्ष क्रूब वर्ष वा वा बार मी विकासी निर्मा की विकासी विकासी वा विकासी य। इस्राचराईसायाया विरामी रेस्रान्यस्या दीका र्स्याका माहेका स्राम्या स्टास्या प्रस्ता क्षेत्र मासुरा ही र्हेमान १५५ तदे स्वमान। ५ मी १५५ त हेन १५५० तमान ही सह हो निर्माण वर्देर्-य-दर्निर्व्यः देशःद्वत् (व्यर्देर्-य-इस्रस) देशूर-दर्से सूर-वीस र्सेवास व्यर्-योवस चारमान्ने द्वारमान्त्री स्त्री स

हेब यहीय उब ही रहा यहँगाया

इस्राक्त्याः व्याक्टराची प्रची यप्तद्वाया चासुस्रा (बेयु "र्ध्यमान्द्वायलगर्भा) क्रीसाप्तची यप्तद्वाके स्वायसेया मुन्नार्याचारा प्रमाणा हेब द्व र्रेंग्य प्रतिर्रेंग्य प्रांप्य स्था। ब्रेंद प्रयागसुर यहेश द्वी प्रत्य रेंब प्रयोग ઌઌૣૹઌ૽૾ૢ૽ૺૹૣૹૹ૽ૼઽઌઌૹ૾ૢૺઽઌૣઌઽૡ૽ૼૼૹૹઌઌઌૹૹૹૠ૱ઌ૽૽ૹ૽ૣૺઽઌઌઽ૱ૡ૽૽ૺૹૢૺૡ૱ कें यहत्र याणु र्श्वेद 'यमाश्चर शकें याश्चर एट् 'यद्देर केन 'ट् 'यद्भद 'घमा मी 'यश दश हुमाश हे के लु यादर वदे वद्भव ह्या स्ट्रियाय ल्याय या द्भयय या ना नेवाय वद्भय ल्या स्ट्रियाय वद्भय विश्व दल मित्र प्राप्त में मित्र में मित्र मि चुरा) देवसाद्ये सर्हेन्वर वी विवास विदेश प्रदास विद्यापास विश्वास विदेश <u>বর্দ্রবাধ্য শ্রী বাধ্যুদ বর্ণ বর্ণ বাধুদ।</u>

Donald Lopez mused aloud to the audience gathered for the Gedun Choephel Centennial Conference, "I would like to think that Gedun Choephel would be surprised, amused, and honored by this gathering, to know a hundred years after his birth there is a special symposium in New York celebrating his life." He added, "You probably know he very much wanted to come to New York, and probably would have done so if World War II hadn't broken out. You can only imagine how the course of Tibetan Studies would have changed if he had come to New York in 1941."

Last fall, November 7–9, 2003, New York City was able to experience the impact Gedun Choephel has had on Tibetan Studies even without ever having set foot in this country, when Latse Library hosted the Gedun Choephel Centennial Conference, commemorating the 100-year anniversary of the birth of Tibet's first modern scholar (1903–1951), just over fifty years after his death. The event, free and open to the public, featured panel discussions, exhibits, video, and other presentations.

Family and friends of Gedun Choephel, scholars. biographers, and collectors from around the world and from around the corner came to participate in this three-day event. The library's conference room was filled to capacity with interested and enthusiastic audience members who came to honor the memory and the legacy of Gedun Choephel.

An Auspicious Beginning

To open the conference, monks from Namgyal Monastery (Ithaca, New York) recited passages from two prayers for which Gedun Choephel is known to have shown special fondness. Gedun Choephel's daughter, Gakyi Yangzom, lit a lamp offering before a portrait of her father, and a videotaped message from Gedun Choephel's wife, Tseten Yudon, was shown. Finally, Libary Director Pema Bhum made welcoming remarks to the audience.

The varied panels and speaker topics reflected Gedun Choephel's wide ranging hats as accomplished scholar, translator, traveler, artist, and dialectician. Proceedings began with the panel "Written Works of Gedun Choephel," for which Kirti Rinpoche (India) served as moderator, and which featured discussion by Ngawangthondup Narkyid (India); Tashi Tsering (Amnye Machen Institute, India); Hortsang Jigme (India); and Dorje Gyal (Rebkong).

चर्चे ब्री-ची क्रियाय ब्रेस-न्दान हेन चाले व्यन्त क्षेत्र ची चाशुन चयन चात्र स्थायत स्थायत स्थायत गुर्भाद्रयो यद्रद्व र्केश यथेया यात्राश्च राष्ट्रिद्व र्श्वेचश रुद्व ग्री सावश द्रवट द्रा श्चारुवाया देवाबाव्ययाचरुकानी र्युवाबाक्यर्ट्यर्दे व्यवबावाबरासेन। वर्ग्,धीर:ग्री કુતાના સુંત્ર-૧૦ રાતું ૧વા ક્રમ જાષ્ટ્રવા તા કિવાના ફ્રેશ છી સુંત્ર હુના તતું ક્ર્યા ૧ના તવા ધ્રિયાના गोहे देव र्थके (कु मारवय येवया) वय केंग्रय क्षेत्र वहेर द्व वहें व मावर । সমিস. नवर ब्रूप्र ब्रीन रवा नवर देव व्यव (क्रुप्तामा)। वया विश्व के केर (क्रुप्तामा લ્યાજીંત્રાસ્ मुवा (रेव मेंटा) वड्या ग्रीय वासुर व्यव वासरा

ૹ૾૽૱ઽૺઌ૽૾ૹ૾ૺૢ૽ૼઽઌ૽૽ઌઽૢ૱ૹ૽ૼૹઌૹૺઌૹ૿૽ૢઌૢૹૢઽ૾ૢ૽ૼૹઌ૿ઌૢૻૹૢૢ૱ૹ૾ૢ૽ૼ૱ઌઌ૽ૼૹ૽ૣ૽૱ૡ<u>ૢ</u>ૡૢઌ र्येषिया द्वारा र्हेया अर्थे र रेहेर्ब (य व्याया यात्र य र त्वायहें व यात्र । हेर्ब (य व्याया यात्र यात्र यात्र । हेर्ब (य व्याया यात्र या व्यम्भान्ने यो ले स्मृत सूर्यन चा केन स्रोदी न्यन स्रोती न्यन स्रोती प्राप्त केन स्रोती न्या स्रोती विंद है द्वी वर्ष केंद्र विवायमान की भी है दि वासी हैं साथ देश ती की की विवायहन याबर आयब क्रीआयब पालेवा प्येब। विंद यीब चेंद क्री वर्दे द पाले पालेब बिका पाले हैं अ य में निर्म निर्मा त्रमें त्रह्म के अपने के अपने के अपने के अपने कि के अपने कि के अपने कि के अपने कि कि अपने क क्तब केब कें हिया से हें या गीव की कें वाब ल्वाबाय पेट का त्या दें हैं दावाबर । दर्गी क्तब केब कें हिन से र्देन नीत से यानास तस विंद नीस है वे सीस दर है सूर दनों के साथाना नी वर्दे दाये. चसूद चर्डेश द्रीद स्मेग मृ सुरूर्य वासुद चत्र वादर । University of Hamburg बेर परे र्सुपाम् केर सेरे: Doctor बेर परे त्या विर उर मी स्वीत सेर में प्रेन परे ती रम्भास्त्रास्त्राच्यात्रेषात्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रा म् के द से वि द नो सद यद स द यद सुरा ना है भ गुर हें ना भ र्से र वद र त्वा भ द भ ना सुर र यद বাৰ্হ:1

हैब दर रेवि र्टेनाब वर्ति अहुना हु नीहे देव रेवि बबारम नी धूनाब हैं अ नाबर स यावर क्री.शवर्श-रवर देशरा रेट क्षेत्र शवर देशरा तावर्षता रूपा स्थानी वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा रशःग्रीःसुयाःदेवःसे से प्वतिक सर्वतः स्वाशः वर्स्नेत्।

지론도'된'전도회'라고'라'를

र्कें मार्य यन्ते क्षेत्र माहिरा पर नमें यन्त्र केंद्रा यसेया याम्य मुन्तिया सहया मासुर र्षेत्र र्सेट्र याशुद्र-द्मवद्र-याबदः। याशुद्र-दम्वद्र-याबदःश्चायबःग्चीःग्युष्यःशुद्र-वो वद्दबःर्केशःवर्धव्यःव्यवाबः न्दःवर्त्तेवःवर्द्देशः वर्षदः वद्याः वर्ताः वर्त्तः वर्षवः वर्ववः वर्षवः वर्ववः वर्षवः वर्षवः वर्षवः वर्षवः वर्षवः वर्षवः वर्षवः वर्षवः वरव देवै:बदःवा:बदःबुद्:बोदःवैवा:वीशःचलेदशःबःवुद्वःवोवाशःयःबिदःववै:दुर्वेदशःचलेदःवृद्यः। ब्रैं या अदे चरा मा महे रक्षा आपन स्था सुरा हैं। में अप से मही स्था से स्था से स्था से से से से से से से से से



न्यायःश्चेन:न्युम्बायर्हेबबान्मः चित्ररायायसूर, दराविष्ठरादरा क्र्यामायन्त्रीयानुसायप्तराया ४४.चबुर.ता

Gakyi Yangzom and Jampa Tendar Horkhang listen to conference proceedings

In the afternoon there was a lively panel on the translation of works by Gedun Choephel moderated by Donald Lopez (U.S.A.), a professor of Buddhist and Tibetan Studies at University of Michigan and long-time researcher and scholar on the life and works of Gedun Choephel. He introduced Dr. Jeffrey Hopkins (U.S.A.) of University of Virginia, author of The Tibetan Arts of Love, a translation of Gedun Choephel's 'Dod pa'i bstan bcos (Treatise of Passion) who spoke about how he came to translate that particular work. Also on the translation panel were Irmgard Mengele (Germany), a PhD student from University of Hamburg and translator of Sherab Gyatso's biography of Gedun Choephel; and Pema Wangyal (U.S.A.) of Hsi Lai University in Los Angeles, who has translated Gedun Choephel's Klu sgrub dgongs rgyan into Chinese (Zhong guan jing yao) and English (Clarifying the Core of Madhyamika: Ornament of the Thought of Nagarjuna).

The first day of the conference ended with Kirti Rinpoche personally handing out to every member of the audience copies of the revised version of his pioneering work on Gedun Choephel, Dge 'dun chos 'phel gyi rab byed, published to coincide with the conference. This was accompanied by a book-signing by the author.

Celebrating a Life

The second day of the conference was devoted to personal reminiscences and biographical accounts of Gedun Choephel. Speakers included Ngawangthondup Narkyid, a student of Gedun

গ্ৰীপ্ৰাৰাম ম'দেন বিনামী নাৰ্বান স্থিত স্থিত স্থিত স্থান কৰিছিল। কৰি কৰিছিল কৰিছিল কৰিছিল কৰিছিল কৰিছিল কৰিছিল रमता तयर त्याय मुद्रेश र्देर वर वुस्रक रा वसूर ररा र वो तर्र केंबा वसेवा व्यवसानी लयः सहयः लेटः मुसुरः र्हेशः र्ह्युटः सम्बद्धः चर्मुशः मिरः द्वुचः चर्युवः र्ह्यः वर्थवः। द्वीः वर्द्धः र्ह्यः वर्षवा व्यवस्था मुन्तिय र्स्नेत सूर स्मेन स्वा नवर रेंब मून नरा। नवी वर्व केंब वर्षवा व्यम्भ मुः स्यायः स्रीतः मायाः वर्षेत्रस्य । त्रो वर्त्तः स्रेसः वर्षवः वयासः वृत्त्रस्यः मॅ्ट के दश देवरा दीट । दगे वर्द के क्रांच्येय व्यापाय मुंद्री के दिन पार्थ दर्हे या वालेव वह्ना न्यदर स्रायद मुझावराय हे हे कुवा यहरा र्थित। र्हेन स्राप्त हे रायद द्वी वहरा हेरा यस्या त्यामाविता चित्रामा स्मानमा सी स्वामा त्यायर्क्सत्त्रे (ब्रुक्षायरे प्रमृत्र प्रमान्द्रा निर्मायत् के केवाय्येयायम् वर्मे क्रिक्स स्वाप्तुः । मुँर ज. परम् उट्टे विमानयु प्रमेष ह्या क्रीट यो ह्या मार्टि वर्ष दिन हिन

अविश्वायान्द्र हुँ। इत्याया विवा

या चरहे या ही हा १२ वेंबर ६ हेबर हा या राव परित्य रे प्राधीय में केबर में राधी रे या मालुम् लेव यहूना निम्मी यमान यहूँन चना नेश के मेम यमाश्वर "निमे यम्न के यहूँन प्रस्ता स्त्री युवाद्मेशन्दा रेशे अह्रास्थार्थवायातीक्षेत्र।" लेशायवे र्वेवायाक्षेत्रायान्तु वहेत्र वात्रा कुं या र ह रखा था या ज प्यें द पादे पेंद ग्री दिये आहें द । यह यी आवश दवह क्षें व वह र वृद्धे : या या अ बकारित अहूरि विरादे यो सावर्षिया कारायु रियो उर्देश कुरा उत्तरा स्वापा सी सियो हो कारा सी स या सुरक्तेव 'नवा वाचेवाबर वतुवर वावस्त। व्यूवा वसूव वर्चे स्थावव 'युवु वि स्तन 'युव् (शुवे शे) यी सूर्या तस्या मी अर्हेन प्राचनमा स्पेन पति नयी तन्त्र केंबा तस्या वामा मी स्नापन पा यरः क्र्योग्रावियात्रात्रात्रात्रात्रायात्रायात्रत्रात्रम् स्वयात्रात्रवात्राचीयात्रात्रत्यात्रात्रम्।

नवी वर्ष क्रेंबा वर्ष वा वा बार क्षेत्र वा विवा क्षेत्र वा वे कर बार्ष क्षेत्र वा विवास वा विवास वा विवास वा व केन। अप्रशन्न प्राचित्र म्हर में शे (न्द्रीय त्यम्) व्यवस्य स्य "न्यो वन्य केंस वर्षवा व्यवस्था सुत्र वा यत्नेवा प्येत यवे कत्र कार्चन या नेट स्वकाय नट में प्येत त्र हा। " लेका दक्षेया यात्राम गुरे रेवेदे गरीम गारे विंद मी क्रागर दर सेवेद गायी प्रमण हेर्द दर दे दग त्मरा चीत्रः चतुः भीषा सम्बद्धाः सम् য়ৢৢৢয়য়য়ৢ৾য়ৢৢৢঢ়ৢ৽য়ঀ৾৽য়ঀ৾৽য়৾য়ৼঀ৾ঀ৾৽য়ৢয়য়ৼয়৻ঀয়ৢঢ়য়ৢঢ়ঀঢ়ঢ়য়৾য়৽ঢ়য়৾৽য়ৣয়য়ঢ়ৣয়ড়য়ঢ়ৢয়৽ড়য়৽ क्यायी:पाशुदायपदायाबदा।

> क्र्यायमुखाम् 4<u>5</u>751

A page from Gedun Choephel's personal notebook. Collection of Jampa Tendar Horkhang.

Choephel; Gedun Choephel's daughter Gakyi Yangzom (Lhasa); Dorje Gyal, a native of Gedun Choephel's hometown; and Thupten Tsepel Taikang (U.S.A.), who had met Gedun Choephel and heard him speak on several occasions. Horkhang Jampa Tendar (Lhasa), the son of Sonam Penbar Horkhang, who was a close friend and student of Gedun Choephel, and had been caretaker of his writings, spoke about the friendship between the latter and his family. Mrs. Lodi Lhawang (Canada), with her son Jamyang Norbu (U.S.A.) translating for her, shared details about her brother's close friendship with Gedun Choephel and her own encounters with him in her home in Lhasa as a young girl. She recounted how Gedun Choephel suggested to her that since Tara is a female deity, a thangka of Tara painted by a woman would be better than if painted by a man. She acted on his request and painted a thangka of Tara for him. Also shown was a filmed interview with the late painter Amdo Jampa, and more of the videotaped conversation with Tseten Yudon in Lhasa. Sadly, Tseten Yudon passed away just a few months after the conference, so this taped interview is an especially precious contribution to the proceedings and to the library's collections.

A Scholar and Artist

On Sunday, November 9, Tashi Tsering of Amnye Machen Institute moderated a panel "Manuscripts, Illustrations, and Personal Items of Gedun Choephel." Lobsang Shastri (India) of Library of Tibetan Works and Archives in Dharamsala showed the considerable holdings of Gedun Choephel material in his institution. Filmmaker Luc Schaedler (Switzerland) also shared with the audience his extensive collection of digitally stored photos and reproductions in conjunction with presentations by Tashi Tsering and Lobsang Shastri.

In honor of Gedun Choephel's skills as an artist, Dr. Clare Harris of Oxford University (United Kingdom) presented a talk



त्रस्यासेर ग्री सुना हेरा।

र्केंग्रस ब्रेंग्रस ब्रायत साने हैं होट स्वर्स ही केंग्रस सुन्तों वर्त केंस वर्ष वर्ष ही में वर्त ही केंग्रस वहेंब नाबरा वहमान्त्रत्यार्दे स्त्यानाया (आर्टेः)न्ता योवास्त्रे सेंब सेंब व्यानाया (आर रें:)। कें:रेट:(मृगु:व्यम्बरं(५च्चैब:व्यब:)। ५९:व्यं व्यवःयेब:व्यम्बरं(ये:डेब:)चड्कःग्रीकः याशुर-द्मवद्गायहरः। याशुर-द्मवद्गायहरःश्मवद्गायहर्ष्वः वर्षः वर्षे वर्षः वर्षे वर्षः वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे व याचर्। भुदायात्रवाहरू स्थाना मुह्ति व्यामारा देवा मान्या प्रति वात्रवाहरू साम्यान स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान शर विरा केंद्रमाश्वमाश्रास ऑर स नमें हो राय है महिमाह मिविय दस केंद्रमाश्राद में या र्यात्वराष्ट्राक्ष्मार्यमार्थ्यात्वारमायार्यात्यायाः अवायवार्यस्यारात्रा यमात्रार्मेवाहे। स्रायम् दमाद्वीतात्रार्मे साम्यान्यात्रीतात्रात्रात्रीतात्रात्रात्रीतात्रात्रात्रीतात्रात्रा वस्तात्रमान् न्यूवै नुसावदै या पर न नुस्तिमा मुन उद्य मु स्नेश के देवा प्येत पा सर्देत र्थे51

र्देनायः र्सेर-रे-रना मोर्चनात्या नमे वर्त्त र्हेयः वयेवा व्यन्य ग्री साहयः दरा सैया वर्षेत्र शदु लुवा द्वाया इ.श्. वश्या क्रिया श्रीट यद् वर्षोशया सूर्य क्रिश्च श्रीया वर्त्रोअअःसूर्वःक्तीःवटःदुःर्क्रेरावटःवुअअःयःवसूर्वःदरःवयावःदटः। इःस्अःवःवरः ल्रेंट्र तर्द्र में देश महिताला अधिकार में केंद्र में देश मानाबर बिनायह मानिस्य करा सु'चल्रम्थ'पदे 'नमे केंश' यम्थ'मु 'थेम' देम्थ 'सुम' प्रसूद सार्ट 'वर्षे य'र्थे 'न्स्य हैम अप्तेः यदः अप्तुअअप्यम् अवश्याके अभ्यम् याद्वदः भेदः वेदः दः चरः दः अदि अर्धेदः स्थ्यः दः आक्रुरः नवै नवी वन्त्र केंबा वसेवा क्षेत्र क्ष योद्धेशःभ्रम्योद्धरः स्तृतः पद्धः देवः प्रम्योत्ते द्वेदः योशा योस्परः द्वरः क्रियः यावाशः र्ह्वयाश्चरः प्र वर्दरसेवस्त्वत्वासाम्बद्धराषुवायस्टार्के यदसासेससाके प्यता विद्योगसेससावसेटाउ लार श्रेन त्रवे ह्यू ब्रम मालर से मान्य त्रवे निमे वत्र के संवर्ध वायम मी वाहर मानिस सु चलुमारायदे विंदमी भुष्ट्रिय द्वापित द्वाप्तिय द्वापतिय द्वाप र्गार ले. चर्च द्या ही अपका ला होका तर चीचाका ततु हार चा है। चीका लची प्रकार हिंद हो बा

याल्य प्राटः शंदे : श्रे प्री मूर्या प्रमुख प्रमुख प्रायु प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्रमुख प्रम वस्याची भूरता यामाराय में चिरायते भूया यहता विराह्म स्वराची चारा लेखारा है वे रामा स्वराह्म विषाद्रा वास्त्राचीत्रवाधीत्रायवीत्रायवीत्राचे विषादे वास्त्राचीत्रवाचत्रवाचत्रवाचत्रवाचीत्रवाचीत्रवाचत्रवाचत्रवाचत्रवाचत्रवाचत्रवाचत्य व्यम्भागीतिहरसासुवादर देवार्गेरात्र सेंद्र सवे द्रमी व्यक्त केंस वसेवागी हें वावदीर बेर च महिन्न च द्वत प्रमाप्त प्रच प्रेर्प च र कर्म के महिन्न प्रमाण करा है महिन्न प्रमाण करा महिन्न प्रमाण करा है महिन्न प्रमाण करा है से करा करा है से करा करा है से करा करा है से करा है से करा करा है से करा करा है से कर व्यः हुः न्ये अर्हेन् विरुद्ध कें र्वेष्यायन् वर्दे वे नुरुद्ध का करा करिया पर रहे वे नुपान का मी ब्रेट्र बर्ग महिंद्र वक्र स्पेबा वहे मान्ये अहेंन् विद्यो विद्या स्वी विकास विवास विद्या है स्वी र ই.মাধ্রপ্র.মান্ত্রীমাপ্র.মূমা

८ केंद्रि केंद्री का यह यहेद क्षेट्र का ब्रोह्म यहेंद्र केंद्र यह का ग्रीका ८ केंद्र हु का www.latse.org অ'বাইবাঝ'র্মবাঝা

entitled, "Gedun Choephel as Artist: the First Tibetan Modernist?" in which she examined the personal painting style of Gedun Choephel in the context of his experiences and influences in India and Sri Lanka, and presented her findings on a wall painting of a Wheel of Life in a temple in Kalimpong, which she believes to have been painted by Gedun Choephel.

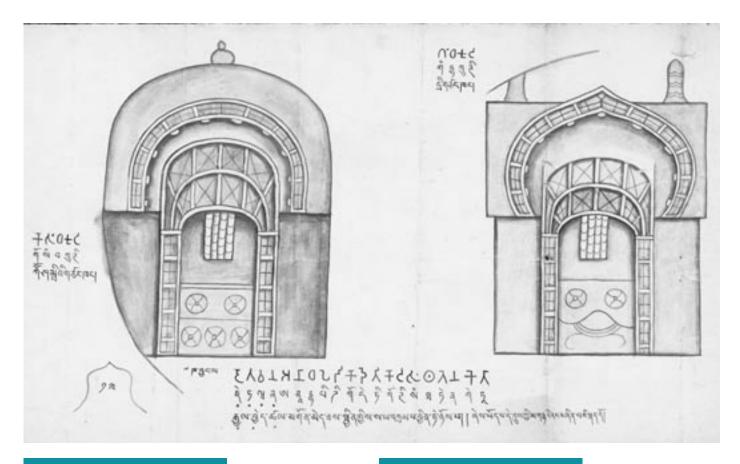
An Enduring Legacy

The last panel of the conference, a roundtable discussion of Gedun Choephel's role in modern times moderated by Heather Stoddard (France) and featuring discussants Jamyang Norbu; Melvyn Goldstein (U.S.A), Tsering Shakya (United Kingdom), and Du Yongbin (P.R.China) produced lively exchange between participants and drew interesting comments and questions from the audience. Although running overtime by almost an hour, the audience remained rapt and engaged, a testament to the importance and enduring meaning and influence Gedun Choephel continues to hold in our time.

In addition to the panels, the conference featured an unprecedented exhibit of Gedun Choephel's personal effects, manuscripts, and artwork. Highlights included a unique journal and manuscript in the possession of Horkhang Jampa Tendar; manuscripts from the Library of Tibetan Works and Archives and the Amnye Machen Institute; manuscripts, photographs, and first editions from the collections of Tashi Tsering; never before exhibited artworks by Gedun Choephel courtesy of Pema Byams; and first editions from the collection of Kirti Rinpoche. Yungdrung Gyal, although unfortunately unable to attend the conference, generously loaned to the library personal items of Gedun Choephel from the latter's home in Rebkong, including a personal writing table and a thangka painted by Gedun Choephel as a teenager.

Other highlights included a sneak preview of a new documentary on Gedun Choephel entitled Angry Monk by Swiss filmmaker Luc Schaedler (Angry Monk Productions), and a presentation by Raphaele Demandre (France) with video footage of Gedun Choephel's birthplace and the construction of the Gedun Choephel Middle School in Rebkong.

Latse Library plans to make a video of the conference proceedings available on our website in the coming months. Please check our website for future developments and to view the conference program.



ধন্ম ব্রুমঝ শূরীঝ বাইঝ দুম বার্দ বেই ই ইর্মা

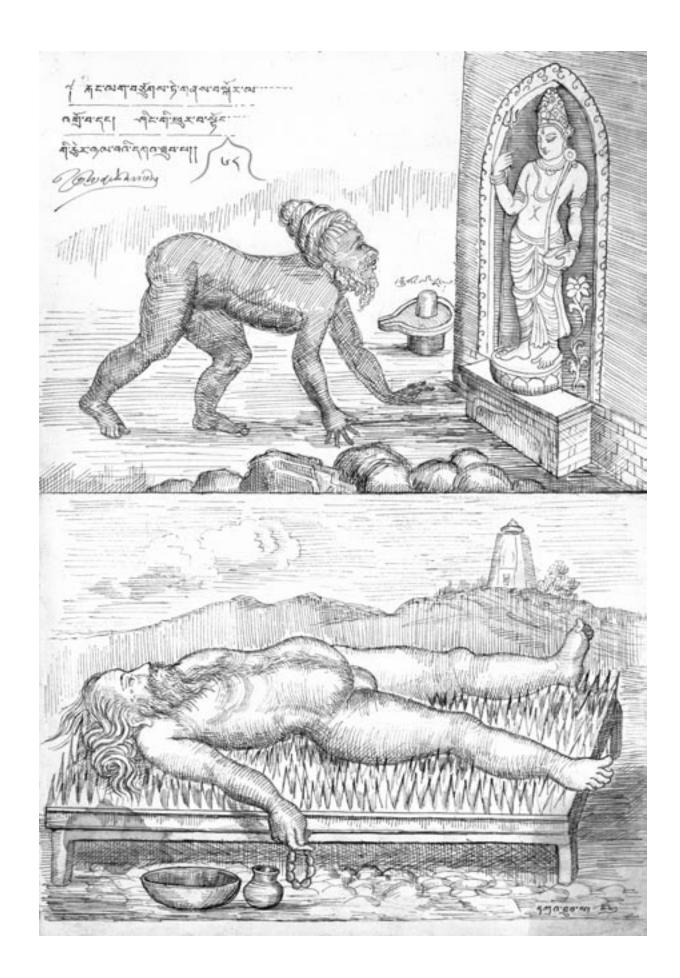
रयो.पर्य.क्र्य.पस्याग्रीय.येग्रासप्र. रे से ग्रंग्यू राहेरा

द्यो यद्व केंबा यदीया हेबाइब केंबाबा यद्वे मूमका या है द्ये सर्हि (यद दब रादवी वर्ष क्र्यात्रवताची सेवा वर्षेत्र शर् द्वारा होत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षेत्र वर्षे र्क्षे ने निया है 'आसर्ने मर्डिस' (ग्रह सुतु मर्डिस म्ब्रिन्) ह मह्या सारि आस्त्रे आस्त्रे स्पन् साम्रस यम्बाद्यादेवु प्रतार्मे स्विस्तानम्बर्धान्यस्य स्वत्यस्य प्रत्ये । आस्त्रीयस्य स्वत्यस्य स्व ૹૢ૽૽૽ૢૢૢૢૢ૽૽ૡઽ૱ૡ૽ૼૡ૱૱ઌૢ૱૽ૢૼ૱ૐ૽૽૱૽૽૱૽૽૱૱૽૽૱૱ૹ૾૽૱૱ૹ૽૽ૼૹ૽૽૱૽૽ૹૢ૽૽૽૱૽૽ૹ૽૽૽૽ૢ૽૱૽૽ૹ૽૽૽૽ૢ૽ૼઌ૽૽૽૽૽ૢ૽ૼઌ૽૽૽૽૽૽ૢ૽ૺઌ૽૽૽૽ૺઌ न्याःवैसायविकायाः केंसाल्यासायात्रमः स्नानसायीः वीतासायाः सीता से केंदि द्वाप्यस्य यान्त्र क्कें अपूर्य या तिया पे हार्जें र लेया श्राया श्राया श्राया लटा । विराया श्राया हार्जें राजा हर् याडेशःष्ठरःयादरःश्चे। विंदःस्ट्लैदःयालदःतुःयालेवाशःहेशःखाःभ्रेःयनःसःचुस्रशःवात्रशः ब्यामाडेयाकुरामाब्दा। यद्यायेविःश्चीः ह्वायडुःमाडेयाः यरायाः हेः द्येः सर्हित्।यराब्याद्वीः <u>५५५ के श.५६७ त विद्यात्र श.४४.५५ हे प्रत्यात्र श.५५ के श.५५ के श.५५ के श.५५ हे श.५५ के श.५५ हे श.५५ के श.५५ ह</u> अःतुअअःगुटःग्द्रवृत्वअःथूरःथेवशःयःअःचद्। देःश्चेंदेःद्गगुटःवश्वअशःथेवशःयरः 'चहेब'र्क्षेण्याल्यायाच्याचा क्षेत्राची सामे हेर्स हेर हेर्स हेर हेर्स हेर हेर्स हेर हेर्स हेर हेर्स हेर हेर हेर्स हेर्स हेर्स हेर्स हेर्स हेर्स हेर्स हेर्स हेर्स हेर्स

THE PEMA BYAMS COLLECTION

Newly-Discovered Artwork by Gedun Choephel

Latse Library was honored to be able to introduce to the audience at the Gedun Choephel Centennial Conference a recent discovery of twenty-seven illustrations by Gedun Choephel's own hand. The collection was brought to New York City by Pema Byams who lives in Gtsos (Hezuo County, Gansu Province) in Amdo. Her late husband was Samten Gyamtso, who knew Gedun Choephel while both were in Labrang Monastery's Thoesamling (Thos-bsam-gling). There is no information on how Samten Gyamtso acquired these illustrations, but we do know that he kept them carefully throughout his lifetime. After his death, care of the collection went to Pema Byams. It is due to her generosity and adventurous spirit that Latse had the opportunity to display them in the library last November, when Pema Byams traveled from her home in Hezuo to New York City to attend the conference at Latse's invitation.



৻য়৻য়ৢ৾৾৽য়ৼ৾৽য়৾৾৽ঀয়য়৽ৼৼ৾৽৸ৼ৾য়৾৽ড়ৢ৾য়৾৽য়য়৸৻য়ৣ৾ৼ৽ৼৢঀ৾৽য়ৼ৽ৼৼৼ৾য়য়য়৽ড়ঀয়৾৽ড়ঀ ब्रॅ के क्रा अन् ग्रे के क्रा कर के के क्रा के अपन्य सूर्य त्या के द्राप्त त्या क्षा अपन्य प्रचार प्रचार स्वासी अपूर्य स्वासी अपूर्य स्वासी अपूर्य स्वासी अपूर द्यारा देव के देव विकास मार्थित मार्थि ्राचरुते त्ररः या सुना यश ने नात्ररः। धरार्था स्वरुष दुन दुन स्वरुष या र्वेन धीना नुस नेनः वर्सेवासदे वर्से च बेशस देवे र्से अञ्चीवा दरणेवा श्चीर छी स्वा व्यश्यावर । देवा वादश यान्यर पहुः सहया प्रश्चीया हुना ला खुै यद् सा गुस्तरा यान्यान्य तमा मान्य हुँ र्वेद् रेवाना रत्रें स्वितः हें अञ्चीता त्राया श्रुप्ता त्राया हो स्वाया स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स् नुसुःन्नो मर्थासामानुस्यः सुः सुदैः स्रायसः न्यमः सुरायसः न्यम्यः म्यादः मसूरः म्योसः वर्षनः मीः नियः हैतः यारः अर क्षेत्रा सम्मूत्रं यावरः। ५ द्रांखा खे सन् अः व्रुअयः अवायः निर्देशं वर्त्ते वर्त्ते वर्ते वर्ते वर्ते याचेन्राने म्बरार्थया ग्रीशान्वमा स्ट्री

७। यु : यन : या नु अर्थ : या विश्व : या व गुःनिवादन्त्र केंबादमेवाजी में बेंदि अर्घेट बूट वाजी मुने चुट विट विट विदास के बार विवा ग्रीकाः सर्वेदः प्रवे 'द्रवो 'युद्दुब 'र्केका' युवेया ग्री 'द्री हो 'युद्दू रास्त्र 'युव्दू वा प्रवे ' Gustav Roth यान्य गुरुष गारेश हर गार्द प्यें प्राची केंब्र गुरे कें क्षेत्र में केंब्र मुक्त केंद्र में केंद्र में केंद्र <u>न चित्रा मुक्ति से से जात्रा हो स्पत्र में ने सुर्के र मुक्ति मुक्ता मुक्ता महिलामा से न</u> यन्ता सूनाकंन्द्रवृञ्च निमान्नेयायायदावत्यार्थेन्। देशंबरकेर्वेयायान्त कॅशःस्टामी अर्जन्हमाशः श्रमः विवार्त्तं मञ्जून १०५म

ष्याचे पराया नुस्रका गुरुषा वासुरका या खुरात्र। दराये हैं से से पदि हैं से सारका खान हु त्रैयो.लूर्.योर.। रूपो.योथका.योक्षर.याङ्गु.श्रीयका.जाःश्रूर.धुयो.व्ह्न्र्य्यीर.री.बूर.श्रवर. ५ भू न्यर अहेर होर पर्व पे परि भूगार्थे ५ पर रेता ५ नि के अर्के न वस रे के दि ५ ना रे रे या अर मुस्य प्रस्ति या यथा। ५ प्यें र मुं रे से यथा समें र मदे अर मुस्य समें र्वेश्वरते १७८८ धोद्र हिटा। वद्देशः हृदास्रववः यदः द्वो क्रेशः सक्रें वाद्रशः देशः स्वाद्रशः १४८ द्वेश र्थे ५ स नसूद र्थे ५।

रै:ऑन्:न्ज्ञानीयाजोर्ड में:न्जो यत्_यक्टेंबाययेवारम्हेन्।येनवार्क्केटानवेःक्चानारा <u> ५८:श्रेटमायापीप्पुयार्श्वेयार्मीग्रशामविशा५८। महश्रहेत्। हीपीटाशेर्मेमार्श्वेमाशा</u> र्देश्चर नाबर प्पेर्। रेकें रेप्तायम प्रमायन हैना रनो केंग मुनासुर हें अनाहम कुर यास्त्रम् क्री.बट.श.बुंश.सदु.बट.री.यासका.स्वर.यासट.सूर.स.टी.रया.टी.श्रुर्यंतु.यास्वशःक्री. वर्षोवायत्वर दरकें वाचवाक उरहे वायर विदा

นรฺฆฺฐผฺฆ

র্থমা

Right: Pema Byams in 1956.

ঘার্লুখা นรุฆ:ฮูมฺฆฺ

Pema Byams

Left:

२००३ वेदि:ह्येह्य २७ पदःबदःवा

in November 2003.

Pema Byams herself has had an illustrious career. This remarkable woman was a pioneer in the Tibetan language television and film industry. Working with a group of scholars and actors (including Sungrab Gyatso, Sonam Rinchen, and her husband Samten Gyamtso) in Qinghai in the 1950s, she was one of the first - and the first Tibetan woman - to translate and dub Chinese films into Tibetan. She also played a key role in the publication of the first Tibetan language magazine 'Brog pa'i 'tsho ba [Nomad Life] which first appeared in the 1960s. Now in her 70s and retired, she remains dedicated to the endurance of Tibetan language and culture.

The collection expands greatly the known corpus of art works by Gedun Choephel, previously limited to the famous sketchbook in the possession Gustav Roth in Germany. There are watercolors, both bold and delicate, and ink and charcoal sketches. Many of the works are signed or stamped with one of two of Gedun Choephel's personal seals.

As Pema Byams relates, there were originally around fifty pieces in this collection, but during the Cultural Revolution a portion was lost and only twenty-seven remain. Gedun Choephel numbered all his drawings and paintings in this collection. Among these twenty-seven pieces, the highest number written is 178, which suggests that Gedun Choephel made at least 178 of such illustrations.

The illustrations mainly introduce the culture, traditions, famous sites, and flora of India and Sri Lanka, areas Gedun Choephel visited and wrote about. Some of the topics of the illustrations can be found described in Gtam rgyud gser gyi thang ma [The Golden Spread]; indeed some of the captions accompanying illustrations can be found repeated nearly word-forword in that text.







A Conversation Between

JAMYANG NORBU AND ELLIOT SPERLING

For most of his life, the notoriety of Jamyang Norbu in the Tibetan exile community has sprung from his unconventional stances—artistic and political. Upon receiving the prestigious Crossword Prize for Fiction in 2000, however, he joins the ranks of established world writers. The brilliant success of his novel The Mandala of Sherlock Holmes (Delhi: Harper Collins, 1999) in India prompted its publication in England, and in the United States. (The latter edition was titled Sherlock Holmes: The Missing Years in order to appeal to American readers.) The book has since been translated into seven languages: Dutch, French, German, Italian, Japanese, Portuguese, and Spanish.

Jamyang has also authored several short stories, collections of essays, and a volume entitled Zlos-gar: Performing Traditions of Tibet. The latter reflects his interests as director of the Tibetan Institute of Performing Arts in Dharamsala. In 1993, he co-founded the Amnye Machen Institute. Having spent the first fifty years of his life in India, Jamyang now lives in the Appalachian foothills of Tennessee. He is married and has two children, aged 7 and a newborn.

The following discussion was held in the reading room of the Latse Contemporary Tibetan Cultural Library on November 9, 2003.

Elliot Sperling is professor of Tibetan Studies in the **Department of Central Eurasian Studies at Indiana** University.

Elliot Sperling: Jamyang la, it is often said that so much of literature is autobiographical. To what extent do your own experiences, growing up in India, growing up in the Darjeeling-Kalimpong area, carry over into The Mandala of Sherlock Holmes?

Jamyang Norbu: I used a kind of contrivance in the beginning, introducing the story through a gter ma or lost text that I discovered. But, the book itself is not even semi-autobiographical by a long shot. Of course, all the Sherlock Holmes stories, all the Kipling novels and stories, and the Ryder Haggard stories that I read as a child, in a way compelled me to write this book. It is my tribute to the three popular Victorian writers of my youth.

ES: I don't mean "autobiographical" in the sense that you lived the experience. But you came out of this milieu, having been educated in the Darjeeling-Kalimpong region, which for the Tibetan world (even prior to 1950) was truly one of the cosmopolitan crossroads. It was a place where you would find Indians, English, Tibetans, Bhutanese, Burmese....

JN: ...English, Americans, White Russians, Jews...

ES: One thinks of Kawaguchi coming out of Tibet and rushing, in Darjeeling, immediately to the home of Sarat Chandra Das. So it was a place where you had all of this cross-cultural fertilization and what you have produced in the book is really something that pictures a crossroads, if you will, between this English atmosphere, this Tibetan atmosphere, India, and so forth. So, in that sense, I was curious as to whether that part of your background was influential in leading you to the subject matter or piquing your interest.

JN: Oh, absolutely. In Darjeeling, I lived in an English house with fake Tudor crossbeams. It was called Minto Villa. Previous occupant: the family of Tom Stoppard. I went to a school where 15–20 years earlier, during the war years, Lawrence Durrell was studying. The British imperial influence was hugely influential in my producing this thing, plus, my own fascination with Tibet which to some extent came from reading Victorian writers on Tibet. I also heard a lot of stories of Tibet from my mother. I was fascinated with Tibet since I was very small. But, one of my first real feelings for Tibet came from finding in a second-hand bookshop Sven Hedin's three-volume Trans-Himalaya (1909–12). He made it all the way from Simla to Shigatse, and the book has a portrait of the Panchen Lama. It was in pristine condition! I bought it very cheap, with my pocket money. I just read, re-read, and re-read that book. And from then on, I read all the other books on the exploration of Tibet.

ES: Most people pick up your book and say, "Well, he is clearly influenced by Conan Doyle." But, another influence there, for which you don't have to dig very deeply, is Kipling.

IN: Yes.

ES: Some of Kipling's characters even populate the pages of The Mandala of Sherlock Holmes. I have to ask you about your attitude towards Kipling. He has been excoriated by many as "the supreme poet of imperialism," "arch-imperialist," etc. What is your attitude towards him?

JN: Well, my attitude towards Kipling is the attitude of every educated Indian. Politically they may disagree with him, but Indians love Kipling. I think most of Kipling's writings still sell very well there to this day. We all agree that sometimes his rather crude imperialism is offensive. But, that is completely negated or counter-balanced by his genuine feeling of love for India and the Indian people, especially in the novel Kim. So, my admiration for Kipling is unbounded. He is the only real writer of the Raj India that I can still read and not get bored!

ES: Would I be incorrect in saying that there's a certain strain of Anglophilia in the book? I don't mean that it is uncritical Anglophilia, of course, but there is a certain affinity there which has its roots, not simply in your own experience, but in the experience of Tibet going back to the period after the Thirteenth Dalai Lama's residence in Darjeeling, when the first Tibetans began to be educated in the English system, when a number of prominent people in Lhasa actually developed very warm and cordial relations with people, such as Charles Bell and others. Could you in some sense see this integration of Sherlock Holmes into the Tibetan world, which you have done very imaginatively, as following from that strain?

JN: Oh, absolutely. There is not only a strain of Anglophilia in the book (laughs), there is a whole streak of it in me. Of course, I am aware of the shortcomings of colonialism and imperialism. But, at the same time, I take my cue from great Indians: the doyen of the Bengal Renaissance, Raja Ramohan Roy, and even Gandhi. There was a whole revival of Indian civilization and appreciation of Indian culture and literature, which was started by the British and inspired Indians at that time, especially those from Bengal. Just because someone does some injustice to you, it should not compel you to completely disregard some of the good points in that person's culture. For Indians also, it was a great opening up of their mind to the West. Even now, Indians appreciate the legacy of the British Raj: a constitutional government, the parliament, the

law. All of these in some way bind the disparate people and religions of India together.

ES: Have you gotten any reaction about the book from China?

JN: China, no. Actually, just from Tibet. I don't think they have read it there, but I know some Tibetan writers are happy that a Tibetan writer outside has gained some kind of international recognition. I got a telephone call from a journalist at [a major paper]. He met a number of Tibetan writers and they told him, "Jamyang Norbu is our kind of writer." More than China, I have gotten a tremendous reaction from Indians. There has not been one negative reaction to the book from Indian readers, even from the very young. One high school student who read the book while trekking in Dharamsala recently wrote me saying, "You are the first



writer who has written some kind of fiction concerning the West and India and who looks at Indians in a funny, but not demeaning, way." In India, there is more of an internationalist attitude, even among poor Indians—an idea that we belong to a larger world. There has been no resentment from any Indians at showing this Indian figure [who helps Sherlock Holmes] basically as a sidekick to an English sahib. There is an Indian director who is trying to buy the rights to my book. He figures that just to be associated with Sherlock Holmes is an honour, even if you're nothing but a sidekick. That's the way I look at it too.

ES: Again, what I find funny is that here you have Darjeeling-Kalimpong, this great crossroads of Anglo-Indian-Tibetan-Himalayan culture, which in the 1950s was considered a "nest of spies." (Perhaps you remember this statement made by Zhou Enlai to Nehru concerning Kalimpong?) With this sort of mingling in your novel, you are glorifying a "nest of spies" or at least the milieu. Spies abound in your book, and British espionage beyond

the Himalayas plays a part as well. But, you have fun with this setting!

JN: That's all one can do with the spy genre. It's like James Bond, but mine is a kind of earlier version.... And it was not only spies, but a great many intellectuals too. Rabindranath Tagore had a house in Kalimpong. In Darjeeling we were neighbors to one of the greatest Bengali scientists, Sir Jagadish Chandra Bose (1860-1937). He was the first person to prove that plants are sentient. And we must remember that even in Darjeeling, there has been Chinese input. Not just the shoemakers and restaurateers, but one of China's greatest modern thinkers from the Manchu dynasty, the neo-Confucianist Kang Youwei lived in Darjeeling with his daughter. He wrote his final book there, the Datong Shu [Book of the Great Community] (1897).

Such interesting and great people! It was not just ex-colonels living on half-pay in Darjeeling. There were former aristocracy, princes and kings. A relative of the Amir of Afghanistan, for example, was exiled to Darjeeling, living there on a British pension. Descendents of the last kings of Burma were living up in Kalimpong. When you had a party in those places, it was very very interesting. The duke from Tibet who had been exiled, Changlochen (Lcang lo can), lived there and supported himself by teaching Tibetan to schoolchildren. (laughs)

ES: You had people like Dorjiev, Prince Peter and Joseph Rock in Darjeeling. And Gedun Choephel (Dge 'dun chos 'phel) passed through the area as well. This is fascinating. It's cosmopolitan. And within the context of the cosmopolitan, I'd like to ask you: Where would you situate your book? I could imagine a critique which says this is not Tibetan writing. Your getting the Crossword Prize allows some people to put you in a box saying, "Well, this is that genre of Indian literature in English." In terms of world literature, if we can speak broadly, where do you situate your book? Is it English literature? Is it Tibetan literature written in English? Is it Indian literature?

JN: No, of course, it's English literature. It's like... Rushdie and Vikram Seth. We are writing in English. This is English literature. The subject is Tibet. The subject may be India, Victorian India. But, I'm an English writer as much as William Shakespeare ever was, or Milton. Maybe I'm not as good as they were, but I belong in that group.

ES: I note that you say "maybe!" You leave open the possibility that you are as good as Shakespeare or Milton. But who am I to dispute that? (laughs)



JN: At one point people used to try pushing all the writers from the colonies—from South Africa, Jamaica, India—into this rubric of "Commonwealth Writers." They are not Commonwealth writers. They are English writers. One of these days, if I am prolific enough, I may find myself buried in Westminster...

ES: Do you plan to convert to Christianity in the near future? (laughs)

JN: Well, if it gets me a spot there, in Westminster, I might... (laughs)

ES: Again, in terms of English literature, a critic would say, "His models are not simply English. They are English imperialists of the Victoria-Edwardian period!"

JN: Yes, and quite deliberately. I am not trying to write a retrospective about this period. I am presenting this writing $as\ a$ period piece, as if it were a document of someone who belonged to that period. So, you can't put modern ideas into people from the turn of the last century. I wrote it as a piece of fiction, but there is nostalgia to some extent, because I don't remember Tibet. I left when I was one year old. All my memory: literary constructs, they are constructs of talks with older people, interviews. I know Lhasa, Old Lhasa. I know where all the buildings are. But, it's because of interviews. I can recall things that probably even people who lived in Lhasa don't. So, yes, there's a tremendous amount of nostalgia.

Sherlock Holmes has this expression: "The game's afoot." More than Buddhist, the book is Manichaean, the forces of good fighting evil. That's why the mandala I used in the book is the Kalachakra Tantra. For me, it is really the most un-Buddhist tantra. I would never write fiction around other Buddhist tantras, which for me are absolutely sacred. But the Kalachakra Tantra is apocalyptic and millenarian in a way that ideally serves the dramatic plot requirements of my book. So there you have it. The post-monsoon sky over the Arabian sea is hazeless and clear blue as a piece of Persian turquoise. The air, washed by the recent rains, is so fresh and clear that astride Malabar Point at Bombay one fancies that one can make out the coast line of Arabia, and even faintly smell in the breeze some of those '... Sabean odours from the spicy shore of Araby the blest.'1

Of course it is all pure romantic fancy on my part; the whole bally thing is too far away to smell or see, but from my vantage point I managed to spot what I had come all this way to look for.

Through a scattering of dhows with their graceful lantine sails arching in the wind, the S.S. Kohinoor of the Peninsular and Oriental Steam Navigation Company cleaved the blue waters, the twin black funnels of the liner trailing a wispy ribbon of smoke. The ship was late, it should have arrived this morning. Through a pair of sub-efficient binoculars I had purchased at Bhindi Bazaar, I could just make out the name on the port bow. I quickly walked over the road to a waiting ticca-ghari. Hauling myself up onto the seat, I signalled to the coachman to proceed.

'Chalo!'

'Where, Babuji?'

'The harbour, jaldi!'

He lashed the thin pony with a length of springy bamboo and the carriage trundled down Ridge Road. I popped a piece of betel-nut into my mouth and chewed it contemplatively while I once again reviewed my plan of action.

^{1.} Milton, Paradise Lost.

Hurree from the opening of The Mandala of Sherlock Holmes (pp. 3-4)

Reprinted with the permission of the author.

Jamyang Norbu, The Mandala of Sherlock Holmes: The Adventures of the Great Detective in India and Tibet, New Delhi: HarperCollins Publishers India, 1999. Also available as Sherlock Holmes: The Missing Years, New York: Bloomsbury,

र्वेर-य-रहित-धैवाकी हैं सप्यें।

aea''55544'àx'51



ला है. यो शराय हो थे. यहूँ थे. हो र शाय हे यु. यह र है। हा क्रूबर्चीयःलुचाचीःस्रैरःइटः॥धेरःल्याङ्खाःस् शुद्धः र्योका विष्यं स्थान्त्रः विषयः स्थानः क्च न्यर प्रत्यं प्रत्याचित्र स्त्रीत् म्यू प्रत्ये न्या निवा (क्रें के। HarperCollins, 1999) ब्रेंब.स. त्रमानुषानुष्यार्षुतार्युद्धाः स्वार्मानुष्या वर्गेन र्थेन। सुर रेर वर्षे हैं अय हे हैं वह अ रचिरमार्चे राचु त्यम्यायायी वा हिरा है हिरा रवशर्चेर्'ग्री:विशर्थेद्'उद'ग्री'अर्दुद'ग्राथ'ध'वीया

लुब.जा व्र्ट.बी.सें.श्र्.श्रट.श्र.च.में.बोर.टे.चसेंजा

ब्रुट्रिट्रिट्रिक्ट्वी अर्थे मुर्केट्रिक्रिट्रिक्ट्रि कुवायाओं हेत् श्वेरारें (Edinburgh) वाव्यसुद्यायते खराष्ट्रेरावित्त हें प्यवा (Arthur Conan Doyle) (12446—1630) ฏิหุ้ฤ เลลัลิเลหู มม เมูน เนม เลูน | 1440 र्थर हें प्राया दश भूद ब्रीश सुवायदे नाशर हें या पाने र वेंना हें या सुरी है या सुरी है या सुवासी हैं र

ल.सैट.वट.टट.सैट.इट.उच्चे.उच्च्याचश्चना क्रेट. व्यंचार्क्त्यासुरसीदी चरीदायमानादसायान्या व्यंदानुदा रुषःक्रीःश्रुंचन्नःसः नदःस्वाः नवादःस्वाःवाःश्रुंवान्तःसूदः र्वेट.च.चक्रम.मी.प्रट.चार्चम.क्रम.क्रम.च्याचीम.क्रम.ब्रेचा.सुरी विंट में अन्यत्मिशय दे दिया या महे ब ब्र अन् मुहे ब त्यव म्री,यर्,र्येर.य.र्टर.१८७व.त.शर.त्र्श.यर्ट्जाश.व्रीय.तपु.

याशर च वर्षी संया शर सू वर्षे जा रू. लाजा की सैंद इशश द्विद जय की देश हो वर्षे ॱऄॸॱऄ॔॔॔॔॔ज़ॱॶॖॱऄॱॿॆॸॱॺॱॺॸऀॱॸऻॖऀॿॱॠॸऻॱॖॕ॔॔॔॔॔॔॔॔॔॔ॵॸऀऀ॔ज़ॱॏज़ढ़ॸॱॸॖ॔ॱॱढ़ॕ॔॔॔॔॔॔॔॔ऄॱॸऀज़ॱऄॱॷॱॠॸ॔ज़॒ॴॴ उदः विया मु याद्य पर्दा

र्.ताजा क्री स्निट होना की बटारी। या बया क्रीया होना स्थाप क्रीया होना थी. १८६७ स्थाप म्मनश्रिश्यपति देव मुद्देव विवानी वर्ष दुर्वा वर्षे स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं निवस स्वरं स्वरं स्वरं स्वरं यष्ट्रिकाकी:इकाक्षास्वान्द्रियानवे याकार हेवायावदे स्त्री तुरानु क्षेप्यास्वाने कर् सैयम। वृद्यम्भः स्वमायम् वृद्यम् विद्याने विद्या सन्भारायान्। उराङ्गीन संसुरा। क्रिंगामबेंदेः श्वरादनेदे तरानु वहसानु हरणाई रा નુ :વાનાચાનચાનુ : મુદ્રા ના 'ચી' ખી' ફુવા' સાંદ્રદાસાવચા ધા ખીન, ધાલીના 'ની' ક્રીન ' કે લિના' ફ્રેન ' ફ્રિવા' સુચ ર્ભના શ્રે ત્રે ત્રે ત્રે ત્રે ત્રે ત્રે ત્રંતા કું બાસુ શ્રે " વેંગ વર્સના " ને ત્રે ના ફેશ જી રેગ વિંદ ત્ર ત્વેં ના શ

दशक्काम्पर्दर्चे त्यावर्भे दायरक्षवर्षे वाचुर्याचे सुरावदी देश्वरामा वीपी से से देवे दमान्नमान्हें द्रायाः सूत्र द्वीभार्येद् हेटा। विंदा है द्रमान् हिंदा मानवा हिंदा नामवा हिंदा मानवा है। यिष्यः उदः विरः वर्षायः कें व्यः सुः से 'नर्देशः सुः विश्वः स्वायदः विषाः स्वेदाः । स्वारः सी 'दिरः नुः देवाः उदः यप्रि.म्.बुवायोगान्यस्य प्रस्तान्त्र्यान्त्रस्य स्थान्त्रः स्यान्त्रस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान वर्रेन दी देव विक्र मुक्त विक्र विक् शु.श्र.म्ट.श्लेम्ब्री:क्रुंश्रक्षवृत्वायायहेदादश्यःश्लासम्बर्धाः सम्वर्षाः सुन्दिन्। वर्षायायासानुः र्षिट्योशयाश्वरअर्द्रायर्धेयम्बर्धेयायायाः अवर्षेत्रस्त्रम् स्त्रात्तरः स्त्रीयः स्त्रीद्वातीत्रा <u> प्रिल.री र्वेट क्षे नब्रीम चट्ट रीश में तर्र क्षेत्र ज्या क्षेत्र श्रीम क्ष्य श्रीम क्ष्य में स्वाय स्वार</u> यात्रीयात्राहेशाञ्चाराष्ट्रीत्यवेत्यायात्रीत्र्त्तीष्ट्रायाः श्रीत्रहेषायीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीयात्रीया चल्रेब स्मानमाध्ये

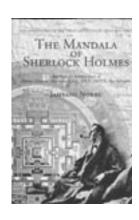
२००० ल्र्यातह्मान्त्रीत्मार्द्यात्राचामान्त्रीः मुद्दायन्त्रीः वात्राचीः मुद्दायामान्त्राचा क्रे.चवे.चु.द्रम्वः Crossword Award for English Fiction ब्रेस्पः दे र्घेष। चु

> वहशार्त्रेरात्मवाशामी स्त्रुरावरी त्येनाशास्त्र मान्या स्त्रीता हे । म्,कि.यम्,री.रेनु,श्रीय,वीकानुम्। रु.यंका,श्रमः का,उस् चर-देवीदाः यदा-दराष्ट्रा सीतिहरू। त्या प्यान्य सीतिहरू। (२२:श्रुव:हेश:य:गहेश:ख:देदे:श्लॅव:य:र्य:वगुवा:के८:देव: ૹૢઽઌ૽.ૢૢઌ૽ઽઌૢ૽ઌ૽૱ૢઌૹ૽ૺૹૢ૱ૢઌ૱ૹ૽૾ઌૺ૾ૺ૾૾ૹૢઽઌૢ૽૽ૼૺ૿ૼૺૺૺૺૺ

वर्गिन् र्थिन।) न्रुट नेव वहेवे बट नु न्द्रीय हैवे क्रुव से वि वी में देश पार्व न्रुवश ही न्द्येतः सन् न्दर्भेतः देवेः सन् न्दर्भः सन्दर्भेतुः विष्यायायाः यस्यान्दरः सन्दर्भः न्दरः । ह्यूदरः ऱेअॱढ़ोचॱऋ॔*षाअॱऒढ़ॱयःच*रुसॱयःचरूष्यश्चाई॔ २ॱर्षेचॱॲ९१ हुँ अॱयः र्येस होच यह्नषाऽन्दः र्रे अय्दी दीर्यस्ये वर्षे वर्षे वर्षे

Sherlock Holmes: The Missing Years 🗟শ

वह्रअन्द्वरकार्द्रस्युःवयावायन्त्रसङ्ख्रारः मुद्दर्ग्दरः मुद्देशाधीयाः सूर्येयावान्तर चिर्यायात्र्यायात्र्यायाः विरामीयाः स्थायाः स्थाया त्योष.यहूष.योषट.सैचम.यविच.योबिट.वीट.टी.वि.तम.ग्रीट.चश्चभा ७७७३ ल्_र्ष्ट्रम्भूत्राक्षाञ्चेत्राञ्च क्षेत्रम्भः केत्रम्भः स्वित्तः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्वितः स्व श्रायत्र क्री.चेश.श्री.बीचाश हिंदर.स्री.ट्र.चश्री.संची.फ्री.क्श.ला.क्री.चोप.री.चबीचाश.क्रीटा २.के.ल.इ.इ.५४.५४.४.७४ तत्र वर्षः अटवः मृत्यः ४८.२. वर्षे येशः लूरी व्रिटः यु. योशेयः ૹૄૢ૿ૼૺૼૺૺૺૺૺૼૺ૽૽ૼૹ૾ઌ૽૽૽૽ૺૡ૽ૹ૾૽૱૱ૡ૽ૺઌ૽ૻ૱૱ૡ૾ૺૺૹ૽૽૱૱૱ૺૹૢ૾ૺૹઌઌ૽૽ૺઌ૽ૹ૽૽ૺઌઌઌ૽ૹૺ



ढ़ॊॸऒ॔ॻऻड़ॕ॔॔॔॔॓य़य़ॖॱऄॱॵॱॸॣॻॖॏॴढ़ऻॺ॔ॸऻ स्याञ्चरम्बरहेवायन्त्रेमाञ्चामरादर्भराष्ट्रम्यस्य (क्षेत्री HarperCollins, 1999)

या दें पा सारा कुर विवास यो विकेश की साम स्थार की विवास हैं वि ब्रैयाश्वार्यासर्ग्रेमश्चर्रारावर्षेरालूरा। रश्चरत्मीक्षिरात्रेषात्वावद्वीरावर्द्यादीशः ष्यानु मानुमाया पुरास्ता विद्या विद्या विद्या विद्या स्थान यदै नर्बे महाइस्र स्था व्याची सार्के वर्तन हो द्राया देशा वर्ष्या स्था

"याञ्चयोत्रास्टा, सें.बियत्राःकृताःश्रीःश्राःजयोत्रां, दत्राःवर्तः केंत्रः यसैयोत्राःश्रीरः क्चिर्वे वार्वेरावानम् "रार्के र्श्वेनावा स्वीता स्वीता वार्वे स्वीता वार्वे स्वीता वार्वे स्वीता वार्वे स्वीता

विंदानीयान्त्रस्यान्त्रीयानीयाः देश्यान्त्राः । विंदानीयान्तर्भयाना वासुरसूर हर। वया सद्वाली वाती स्वार्य रहे देवे क्विया ही स्वर्वा वी विवास क्षेत्र (यदे यार्देर (योत्र क्रिकेट रहे सुर्था यदे स्टर अदय हे यहें त्र । विंद यीश्व अपदे वदः अचित्रं अर्चेत्राव्या "देवाद्वराव्या अत्राव्याव्याच्यात्र्यात्राच्यात्र्याः अर्चेत्राव्याः अरचेत्राव्याः अरचेत्र स्वाराव्याः अरचेत्राव्याः अरचेत्य श्चेन पर्के विक्रीन पर अप्यून र्थेन या अधाय ने यम् या नि ने न विश्व या विक्री कुरी या र्रेशः दशः दर्गेताः द्वारा धरेः वीं भ्रायशः धः वें विताः धेर्। "...

दयुःसादायुः चर्त्वेदः हुतुः च्चीं चर्त्विषायाः याद्यदुः स्वाहिषा देः यसायम् स त्यार्म्यायान्यत्यार्भ्याह्यात्र्यात्रयाच्यात्रे त्येत्रात्रम् स्वतात्र्ये त्येत्रात्ये त्यात्र्ये स्वत्यात्यो र में मूर्य रेश कीर में जभ की योला प्रांची मान प्रांची इटा। यायास्त्रीनःसुः (बनसः र्केयासुः स्रोध्यासुः सूनसः ग्रीसः दायः सेवासः सर्वोदः ग्रुसः श्रेन,ब'र.जश्र,वचीश.ची,चोलर.ज.चचोश.धे,चोश्नर,तुषु,बेर.ज.कीर.जूर,जश्रु, जश्रु ररःयोलरःजः वयात्राज्ञायरः ग्रीःवै यात्र्यं ग्रीःश्ले सः श्लेष्यः यदे स्मानसः हेर। विरः म्रीश्रास्त्रीं में स्त्रीं में स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं स्त्रीं स्त्री

<u> क्र</u>ियामार्तुद्वरम् । १२०—१२४ वर्षाया । क्रियामार्थाया । क्रियामार्थाया । १५० वर्षाया ।

"र्रम्भःमिथानः इत् मुःरम्भः अर्मेदः देः भः द्वमानः हे से भुः विषय।" ददेः रवा.जब.क्रूबा.ट्रे.ब्र्य.ब्रैय.तर.बीर्

"दे-दे-प्यादेश स्वाद्भाव स व्यक्षेत्र र्धेव्य पृत्तेवा वर्षेत्र ही द्वारा विदायी वा वर्षे व्यू रायव र हेरा वारा तरि "वर्ष्युवार्स्सुर् ग्री वर्षो र्स्वावार्यं अपने स्वार्थे द्वारा है । वर्षे वर्षे स्वार्थे स्वार्थे स्वार्थे स्व दे.रश्चर्रश्चायम्बर्धाचेषाःचयश्चायेन्।" देशःवर्हेन्।

सरेतु सर रे देर महिका मी माया मार्थे द द सा द सुर। विर र्थे मार्डे वा सुर है। थीया यो त्यात् । या त्या विकास क्षेत्र । सूत्र या त्या त्या विकास वितास विकास श्रु भे अरक्षे न देन महिषान् र मानिकान सम्मानिकान स्थानिकान स्थान हे प्रक्रिया क्षेत्रप्रदेश मात्रस्य सुरस्य दे है ज्ञार प्रदास्य वर्षम उद्गेत स्वा — र्त्वेनायः र्वे व्यवस्था वित्र ग्रीकामाञ्चेनाका दरा — देतः वाहेका ग्री नायकामार्थेका र् तस्य प्रति स्थित स्था स्था त्री विद्या हिंस प्रत्य त्री प्रता के स्था हिं हिंस प्रता है स सर्वेदमा देर महिमानमा देर स्त्रे प्राप्त स्त्रे प्राप्त स्त्रे प्राप्त स्त्रे स थे से मिर्च में मिर्च मिर्च में मिर्च मिर्च मिर्च में मिर्च में मिर्च मिर्च मिर्च में मिर्च में मिर्च मिर्च मिर्च में मिर्च मिर्च में मिर्च मिर्च मिर्च में मिर्च देश महरू सुवरा देवे सेट या देद महिराया सुरा सूर्व सार्थेन

८ र देवि सन्दर्भन् व्यापनिष्मा के दर्भित्रीय विद्या विद्या परिकार है । શ્રી દ્વુવા દર્ભાદ રેંદ્રે સે ફુસરા ગુરા વિભાગ સાફુસરા દેવ ક્ષાયા છે. જો વારા પ્રા বর্দ্রঝাস্থ্রবার্ট্রের মর্থার বিদ্যা

<u>"जैश्रास्य मृष्ट्रश्रास्य क्र</u>ायवर स्र्रेस्यविष्य प्रमुख्य स्रीतियय।" स्ट्रिक्ट स्रीस हुँचोश येश श्र. शर्य ह्या ह्या चर्तर श्र. याविय त व्या चाया लूट सेवश र श. र अ. र . सेर सेर 직됐다

विंदः वीशास्त्रासद्ये विंवा त्यायदासुरासदेवु देसात्रह्वा हो दावित द्याप्तर्या ब्रूटा बुबायब वर्ष्मिय। व्रिटा बर्जा "तृतु देश। व्रिटा क्रेंटिन याहेबाया होरा यित्रम्भः मुः चेटः ऋसः चुदः र्श्वेदः त्यः देदः यिद्रभः वर्षे दर्मोद्रभः । दर्भः से स्पर्यः सुवा वर्षे क्ष्यायायायात्वेदःस्टायस्याययात्र्यास्यात्र्यायाः न्त्रीयायात्वास्यायः श्चीनर्यायम् नुस्तर्द्रयाप्यम् अद्वीत्। यान्यम् अत्राम्या

भ्रीं विचयः हुंजः श्रीः श्रीः जीया श्रीः वस्त्रेयः चर्तेयः स्त्रेयः स्त्रेयः स्त्रेयः स्त्रेयः स्त्रेयः स्त्री देशःसः द्रेशः क्रीः अर्थोः र्वः ततुरः श्रेः श्वरः यरः क्युरः । दः सः र्वेदः क्रेषः ये देवेः सवाः ब्रशः स्पर

ઌ૾ૻૼૼૼૻૡૼૢૻૡૹૢ૽ૺૢૼ૱ૹૹૄૢ૾ઌ૾ૻૹૄૺ૾૽૾ઌ૽૽૱૽ૡ૽ૺ૱૽ૹ૽૽૱ૹ૽૽૱ઌૹ૽૽૱૱૽ૄૹ૽ रदुःक्षुःचबुदःरुःक्कृषाशःल्टा।

स्रुवे सिंद र से दर्भ प्रतर्भ प्रत्ये का स्वे से स्वे स्व स्व से स्व स्व से स्व स्व से स्व से से से से से से स च्रुंबर्च्यक्रार्ट्स्योबरक्क्षुंबर्चरायुक्तायुक्तिक्षेत्राच्यायुक्तायायुक्तायायुक्तायाय्यायुक्तायायाय्यायायाया શ્ચેનઅ: સ્નેનઅ: દ.વા.વેન: વૃતાય: क्रेंब, દે: (बेग: વયર: हे: श्चु: देव: उद: क्री: न्रॉ) ન યાવા: *ૹ*ૻ૱૱૽૽ૺૠૻૹૺ૱ૼ૱ૺ

८४१ ले २ : सूर : यथ : घर वरे : ५ तुवा थ : दे द द र से लिया वार्ते द : वा वथ : कु

यार्ल्याः वयमान्त्रोनः यद्ये त्यक्के यन्याः युः तुः वियाः स्त्री अर्थाः नगानः यार्ने रः उन ह्नेमायसम्ब्री-नृत्तीयायायब्रीस्सायनुत्वा स्साविते वितानसम्बर्धाः सूराबुद्धाः नरामिते वि व्रियुः त्यम् याम्यस्य स्याप्तः चित्रः चित्रः चित्रः स्याप्ते चित्रः स्याप्ते स्याप्ते स्याप्ते स्याप्ते स्याप ॲन्'य'ने'चेब'डेट'। बो'ब्रानव'ने'घन'गामप्तवे'म्रेट'व्य'वाहन'ॲन्'यवे'र्क्रेमसूर्यं वुट्'।

"अपियः यम् निराक्त्रिं स्युक्ता सुन्य सुन्य स्थान

विदुः क्वियः ज्यामा स्था वाष्युवा स्वामा प्यास्य स्था सम्बद्धाः सम वॅद्-यः महुअः र्केद्-उदः र्श्नेद्रविषाः मैशः विदशः वदुम दे-द्रमः वशः व्यवादिदः देवे स्थेवसः। य चॅट द्वा द्र केट खेट द्वा वी यवा व्य वग्न अवस्य वस्ट वर्ष वर्ष वा वर्ष वा वर्ष वा म् इमाराज्यात्र स्वतः स्वतः स्वान्ते । विद्यात्यः स्वतेतुः इत्स्य। स्वास्य देशे स्वर् सर्द्वाः संस्थानः हे त्रे १२ वेद स्वेद किया किया की सामस्य स्थान स्वापना स्वापना स्वापना स्वापना स्वापना स्वापना स दे.ला.चोर्ट्रट.लाब.चीट.खेट.लीट.ल्याचें.ला.खे.बी.ट्यींचाबा.चियाचेटर.बाक्टरबा.चीट.ला.चीट. ल.ईच.ज.चिर.चेश

विंदः इटः सदस्यः हेः "यार्देद्रः यद्देः यद्देः दया . . . "ब्रेसः यार्देदः याद्वदः । विंदः विंदः याद्वदः वस्तानी नाममा स्वार होता है मार्चेट मीमा स्वार मीमा स्वार स् यीथः स्ट.जयाः यद्देषः र्थेषः घः अयाः योः यादः चयाः अः सुसः हेषः ययः यद्धेदः योषः देः हुयः उद्येषः नुषादीर विराविर वीषायहैना हेन यदैर में खूर है । अरामान र मी खेद या यहा अर्थना दगार मार्नेट उद क्रीश विवे न्युयायन्य प्यस्यक्षम्य। विवासह्य से सन्वे सूस्रायाया <u>ૄઽૹ૽ઌૻૻૣૣૣૣૣૢૢૢૹૻઌ૽ૻઽૹૹ૽૽ૼૼઽૹૣઌૹઽઌ૾ૺૹ૽૱ઌૹ૽ૢ૽ૺઌ૽ૹ૽૾ઌૹ૽૽ૺઌૹ૽૽ૺઌઌ૽૽ૺૺૺૺૺૺૺઌઌ૽ૺૺૼૺૺૹ૽ૣૼૼૼૼૼઌ૽ૼ</u> बुर-वर्ष्ट्र-३४ क्रिक्ट-बुर-बुर-बुर-दे-वर्ष्ट्र। दवे-श्रीवा वाह्रेश सक्र सम्याप

. सैचरा.ट्रेन.तयोश.सै.बुघो.चीयो.तदु.हुरा.श्री.घृ.घरेट.तटे.घुषे.श्र्या.सै.चर्नेन. श.इ.ज.चाचव.त.ढुचा.चाच ट.बु.चक्किंजवश्च.कु.च.केंट.केंट.कें.वेंट.पें.वशश.वट. स्रुव विषा मृत्युर्ग दर्भ स्टायी स्रोगाया है वार्षु स्रोग स्टार्स स्टार्स स्वीत स्वार विषय चर्चन र्लन सम्भावन वार्षेद्र र्धेर वाद्यकार्लन सम्बन्धा विसर्वेवा में विसर्वेवा में विसर्वेवा में विसर्वेवा स विषयात्र व्यवस्थात्रस्य वसून् व्यवस्था अस्य विषयात्र विषयात्य विषयात्र विषय বৰীৰ বেব্যা

ૹ૽ૼૼૼૼૼૼૢઌૻ૱ઌ૽૽ૼ૱ૹૡ૽૱ૡ૽ૺઌ૽૽૱ૹૡ૽૽૱૱ૹૢઌ૽૱૽ૹ૾૽ઌ૽૽૱૱ૹ૽૽ૹ૽૽ઌ૽ૹ૽ र्थिन यन्तरम् विक्रिते से स्पन्य निष्य में मिल्य में मिल्य में स्वापनिक स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि स्वर्धि ट.क्रिय.स्रीयाश.ज.ज.च्या

८.कुंदुं मुत्र र्सुवाश गुःवारा हेवा हु रेट वाहुश वार्श र हुश पुराय दे व्यूश र द ह्मायाने न्या मी में इससाहसाह है सास है सास है सास है साम है प्रमान है जिस व्यंगा है त्या साम है साम शैं-५८-५८-८५-मिष्टेश-भें-इसायायसाम् ५ मुंग्नियान्। यस-५-४ व्यक्ति-स्रीवसा : ॲंग ऱ्गर्यार्नेट: उद: 'दट विंदे: ब्रे: इसस्य ग्रीसः स्रो: सदयः वक्कृतः दसः वसदः यदे: स्राः स्वसः हमायन्निमार्थेद्र हिन्। विकिये श्रेष्ठायान्ने यह विक्रिया स्वित्ता स्वित्ता स्वित्ता स्वित्ता स्वित्ता स्वित्त वर्ष्ट्र

ह्यान्यायक्षान्ते। स्वयायम्ह्याक्ष्यायो सुराक्ष्यायान्त्रायास्ययायो वस्तर नर्भर सेट वस्त्र मार्शे र वर मुट हिट ५ मुट सार नवें हो र सार वें नहें र हित ર્ષોના નગામ નાર્ને દારુષ જીયાને કેંદ્રે દેશાયા ખાદા સુમારો વયે કાવાન થા છે. મામ છે. याः अन्यः स्टः महिंग्याः सुः न्धुर्यः यदेः विदः युग्यायः यथः म्यूनः यदेः में अर्द्धे वृत्ते वृत्ते वृत्ते वृत् चरुवा विस्टेन वाहेश ग्रीश विद्येश या विस्ति विस्ति। वावा या सामित्र ही स्वर्

"धेदा"

"द्वे'रीद्रायाह्यविवाखासीक्रियांचेरा दक्षे चेद्रश्चे ह्या अके विश्व थर्षे द्राय ८.ज.च्याय.स्या.झे.खेर.२८.खेर.खे. <u>ক্রীনঝান্ত্রনঝান্তর অর্ক্ররার্ল্রনিট্রের প্রাথমনের্ছ্র আর্ক্রনাথর বিশ্বীনাঝানঝার অবা</u> ह्येरव्रव्यः र्षेरच प्रेर्।" ==

तर.श.उर्येश.मुक्त.पर्झैर।

લ અનુ સ્થિતે સુત્ર કે વર્ષિત કુ એક પાયે સુત્ર કરા છે કે ત્રા — સુત્ર આવત છે અઠના

"यर्गे क्रेंसन्नय" हे शहे से।

Ippolito Desideri (1684-1733)

रुषाममका १८ यदे सेंदर् दुर्चेदर् दुर्बेदका सुद्धर प्रदेश से वा स्वापन की तरके प्रोसे के विमा

🔃 বর্জীর'ব্বমধার্স্ক'র্মীর'।

क्रॅंश-इ-वर्षीयश-विदार्वद्-यी-क्रॅंश-विदाया-यर्ष-क्र्रेस-ब्रु-या-ब्रेश-विश-विश। विदाद्-विव्याया नसूर्यते देराया वेर् प्येना रये कावायमा नहरू स्था । रह्रा सी ताये दे सूर् ह्येर ही <u> इयः देयः देशः सद्यः देयः वायाशः दयः वियाः यञ्च श्रारः हो। यदशः सद्यः व्याः पक्तः स्वाः स्वाः स्वाः स्वाः स्व</u> देटः यः बेदः देवःदेवः दुवः र्द्धेवावः ग्रीः स्रेः द्वाः (बदः सटः यें (बेवाः वीः वेदः ग्रीः सर्वेदः स्रूटः यः । *चित्रशः* क्रेड्र-प्रवताः स्ट्री दिरः स्नित्रशः हुत्त्रशः हुत्त्रशः हुत्ते हुत् हुत् हुत् हुत् हुत् हुत् म्र्रीमानम्भवानम् । अर्थान्यक्षान्यम् । अर्थान्यक्षान्यम् । अर्थान्यम् । अर्थान्यम् । अर्थान्यम् । अर्थान्यम् રૈવા'યવૈ'ર્જીવાયાર્જેવા'નું'-૬ધુન્ ર્ફેં અ'સુવ્ય'ન'નહસ્ય'વિંદ'વ્ય'ન'-દુદ'ખદ'સુ'અશુન્'નું 'ચૂંદ' ब्रेन'ग्री'र्भेन।

त्रे:शे:ते:रे: १७८० ऍर:षी:त:क्षेर:ब्रीका ऍ:पडु:द्वा:वी:ब्रेट:W:Qदे:कॅकार्ळेवाका: सु (तुमार्थ में 'निमों 'सूर्य में 'सूर्य में (तुर्थ 'स्वर्थ 'में सुद्र 'सम्बद्ध में स्वर्थ | 2020 ल्र्यायर वर्षीया क्रीमासूर जाष्ट्रभार्मीया दीवर्षी क्रियाय श्वाप १००४ व्याप स्थाप श्रीत्यरात्पाक्षया स्त्रीयास्य स्त्रीयास्य स्त्रीयास्य स्त्रीय स्त्रीय स्त्रीयास्य द्वै' १७२४' वॅर:इ'सु:रेटबा:बु:र्बुवाबा:बॅर्] कॅब:र्क्रेवाब:रे:वॅर्-झे:र्केंब:वार्हेर:व्येवा: वहरवः स्रेक्षः यर। कवः स्रेदः ग्रेः दुशः वश्चरः ग्रेः दवरः ग्रेशः श्रम्भः स्त्रः दुः स्वरः वरः। ॱख़ॣज़ॱय़ॸॱॸ॔ॖॺॖॖऀॱक़ॖॣऀॸॱॺॱॾॣॖॖॖॖॺॵॣॸॺॱॸॣॸॱॺ॔ॱॸॖ॔ॱढ़ॖॷ॔ॱॡ॔ॸॱॺॖऀॸॱय़ॸॱॺॴज़ॱढ़क़ॣ॔ॺऻॱॹॖॸॱय़ॱख़ॱ यहेब बना हे से हे से सुरेट का ग्री केंबा कें मान में सुराम कें हो है है है से हैं है से से से से से से से से से रर्गार ले. केर प्रमान १००० ले. हो. इ. संदे हुस. १८ हेर जी सर पर्युर. <u>बिटा ज्ञाम्बर्मासायमें राष्ट्राम बटाइन लासहयाही वेटाट् स्टाट्नटमी क्षेत्रसायेट</u>ा ૹ૾૽ૺૹ૾ૣૢૺૺ૽ૹ૾ૢૺૠૼૡૢૻ૽ૢૻૢૢૢૢૢૢૢૼૢૼૢઌ૽ૻઌ૿૽ૺઌૢૻૻઌૼઌૻઌૢ૿ૹ૽ૹ૽ૼઌ૽ૹ૾૱ૡ૽ૺઌ૽ૹ૾૽ઌ૽૽ઌઌ૽૽ૺૹ૾ઌૼઌ૽ૹ૱ૡ૽૽ૼઌૼૺૺ૽ ्रभूतवटरम्बर् क्रीमवेवेषाभूदर्यम् मृत्युप्ताम् । व्राप्तवेविष्याम् । व्राप्तवेविष्याम् । व्राप्तवेविष्याम् । विरामः बुचा ग्रीरः ब्रेमा साथ विराम् विषया विष्या विषया विषया हो स्वरास्त्री विराम विषया व यदुःस्ट हुर् हुर्द ल वृद्ध हुराया यहिरा ग्रीश विद्य हुर्द मूर्य सामा सह हुरा ही लहे न यिष्यान्त्रभा १७२१ व्हर्म्भात्रभात्रभात्रभात्रभात्रभात्रभावः

चचर्यात्तर्य। ज्यादेवुः 🛎 . ८ चराचीः वीराचकीरः दशासीराक्षीः तथाः ज्याताः ज्यासीरा ल्. ८१ ह्या रूश री सी योगाना स्रामित स्थानी यदैःश्चेन:हुअःहै: १७७२ व्येन्स्त्रीन्।वशःर्वेन:वःन्धुनःवहृताःनुअःयःह्रअःवर्ते।वर्दुनाशःयः अमिर्मिया देवे र्बेद यार्चन मिल्ट मैश्री स्वीट पाया खे योद पामार्च लुका र्यान

ख्न:प<u>बर:५५:म्</u>री:म्बेग्नशःश्लेंटः।

५.४.५.५.के.४४.५१.से.४४.ची.४.के.सूर.४५.ची.४८५.४५.ची.४८५.४५ चर्मेटशादीटाक्कितार्चटार्देचाताक्किटासीराचिरासेयाच्यात्राच्ये खेटशात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्यात्राच्या क्षे ने रे स्थे बेद र्घ सूर द्वा कुथ र्घ सूर्य वार दे र सुक्ष कि स्था के स्था र्भुटः नटः भना दुः अः यः अः वत्। ५: दुः दः भेः भूदेः क्रें अः मुः भ्रें रः भे अः वर्दे ५: नभू दः यश् ટે સૈ'ટે રે પ્યેશ અર્ઠક સેં સવ્યર્ફે વૃષ્ણ ક્ષેત્ર સેંગ્રદ મુદ ભરેં ભાને ક્ષાયાના સ્થાપન દેવ ग्रें लक्ष र्भेक् न्यवर यदे व्यवस्था ने स्वयं ल्लु में १ सुद्र मुक्ता १ के प्रमानिक मानिक मानि र्झे र्ह्यम्बरमञ्ज्ञाचन्। ५.५६८) स्थाने इ.स. १ इ.स. यान्द्र-सद्यः नवी म्यतेशः इस्र सः नन्दः द्वेदः नुः हुं सः हुं निवा नवी स्वा नवी नवी निवा नवी नवी न षरश्च कुषार्क्षेत्रात्युवासान्दरायोः वृत्वे केंस्यात्युवासानमञ्जी वद्गासान्दरायो वद्गासान्या स्वीता सवः क्रुवैः रे सुवाद्युर्यायः सामान्यः वाद्यायः क्रिकाः सामान्यः स्वाद्यः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स કેંબ' દ્રયે 'દ્રદ' દ્રવો' ત્તું ત્ર સું 'દ્રવોં બ' યા વર્ષ ' જી 'દ્રવોં બ અર્વિ ક્રું અચ' વાલુ દ' દેં બ' ત્ર બ' અદ્યક્ષ ' જી કે' ब्रूययदे ब्र्ल्ययं क्रिक्य के स्वर्थ के स

য়য়[৽]য়ৢ৾ঀ[৽]য়ৣ৽৻ৢয়৽ঀয়ৣৼ৻

२७१७ व्यव्यात्रः ३ साम्मानेकी ने में सीमान्य व्यविकार विकास मानिकार सुनावाय वसून विद्याप्त मुक्तामार्डे मुक्तामदी सर्वे स्वर्ते स क्र्यान्द्रम्यविष्यास्य न्यो प्रवेषः क्रियां कुर्वः वा श्वेषा द्वेदः चलेवः यदेः श्वेषयः स्तृ। त्वः २२ धरः हवः वारः दशवा दस्यः वीराः स्व NX:पर्वत पर्दुवा पुरुष है 'खू' पवचर 'हत 'हस र पार्श्व 'च हर । हे 'शै' हे 'रे 'शे' र

ल.लुच.यंश.चर्चर.प्रीट.ईय.चोर.रेशच.चुश.व्र्ट.रेट.कैं.चचट.स्य.चर.च्री.वर्चेल.वर्टुश. त्यायद्वी: स्ट्राचीदात्री व्याप्ति स्त्रास्त्रास्त्रास्त्र स्त्राप्ति स्त्रापति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त्राप्ति स्त् त्यस्य चक्किर ग्री दिवस मानस्य दे दे । वे सी वे दे सी सामें हिंद ग्री दे प्रति प्रति सी सामें सी सी सी सी सी सी संबेग नदः म्बद्धाः अराष्ट्रे देदस्य बेश संवे र्वेना म्बद्धाः स्वा उद्यु में न स्वी निर्मा की निर्मा क यष्ट्रेश.कं.इ.श.वं.वं.श्रथा ताश.इश.कृषं.श्र्.पं.तुत्.सें.सं.रं.वर्षींं प्रवृःस्र्रः धीद द्वर विंद वी वेंद की हो के देवे क्रें र की दिव के ति है के हैं पह के लिए हैं है के हैं है के हैं है के हैं इट.रट.र्च.याचीयान्र.शी.लया.चीन्न.यचीच.तदुःश्या.की.इटु.स्.यवीन्न.रट्ना.शी.नाज्यः की **दर्**या

ने शेने से दर्भे द्यो बैद देवा

बुच र्सुंग्रथ सुने से ने रे भे ग्रासुद र्स्ट्रिय ग्री दद दय ग्राम्य के र्विय है विंद ग्री बेद देव रेव रे रियः करि में स्वर्मियां अर्थे स्टिमें। १८७५ स्ट्रिमाली देशसा स्री है है हैदा १९०८ वॅसवें वासामहिन्या द्वित सेना हु सम्बर्ध द्वारा सेना सेन स्वर (ब्रायटार्स्स) वितानी स्थेयसासु विद्रामी विद्रामी वितास क्षेत्र क् र्श्वर मुंचित्र मुंचे बेद र्शे पालद त्यरा पादरा रहुता सिर रा निया ही पर हिना से पर हिना बन यः नरुषान्त्री विदार्के शाद्दारी का विदाय विदाय विदाय विदाय के स्वाप्त का का विदाय के स्वाप्त का विदाय के स बुवार्द्धेवाबायावात्वबार्त्तीःवबद्धायम्भेत्रीते से भेषाः १७१७ व्यवस्थानाः सुर्वेदार् वेदा ^ऴॺऻॱॺॏॴॴढ़ॴॹॖॖॖॖॖॴऄ॔ॴॶॺॴड़ॸॱऄॶॣऄॱक़ॕॴॶॺॴॎढ़ऄॵॖॱॺॖॱॻॸॺॣॸॱॻॱड़ॆॴ र्ष्ट्र है, हैं च. हैं ये श. की. चूर्र हे यो तर हैं हैं अपने हैं, चर्मे ये श्री अर हो, की श्री श्री श्री श्री श ग्रीक विंद है। १७१७ विंद हुद वार दशवा वीक सू व बद हुद दशर वार्के दिन का ग्रीक विंद वा र् अ.उर्कीर-विर.च.रर्ट्श.शह्र्र-चुश-चुश-श्री-चरेच.तपु.ल्.स्च.त.ध्रि.च.लुध-तश्री पूर्ट. यो वर्र में बेद त्या वर्ष क्या में दुध माले दे देव प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रम के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के प्रमान के विंदानी बेद देन दर्श सुम्मून मार्ग विंदा वेद प्रीम सुद्र साम विंदा वेद प्रीम सुद्र साम विंदा के साम विंदा के स चन्नमः चन्नमः स्वे द्रयाः चालुद्दल्वेचः यहवाः चो क्वेदः दुः स्वेदः स्वरः भेदः वेदः क्वेदः स्वरः स्वावानाः चन्न यह्रेट.म्ब्रिय, व्रि. यह्रेष. यह्रेष. यह्रिय ह्येश. यहरूप. लूर. त. श्रेश. यहेश. ग्रीट. योशजा ह्ये. योर. नुस्रमा मी नर्डन वर्ह्य मी क्री र यदर विंद हो मुद्द नवर हुन या दुँगाय लेन के नदे दें या नय वीदः क्ष्र्यास देश क्षेत्रचनर स्वेत्वर्योदश स्वेदश यीः स्वेत्य यी स्वात्य स्वतः विदेश्यः प्र श्रध्यातात्राचर। वृ्धाश्चार्यात्राम्भाषाः मितात्राः स्रोत्राचराः स्रेषाः स्रोत्राचराः स्रोत्राचराः स्रोत्राचरा क्रुशः देशः वर्त्वा उर्शः वर्गे दः स्प्री

?^ॱसे[,]?ॱऱे[,]दे[,]दें,त्युस[,]प्तम् प्पेन् मसुस[,]केंस[,]त्य केंस्न प्रमेन्न स्ते प्रमेन स्त्री थेद सेंद्रा थेद द्वर विंद नी वेंद्र नी वेंद्र नी वेंद्र नी वेंद्र के स्था त्युनाय विंद्र दे होंना हु हुंद्र सेद्रा विंद नी अर्चे द मी अर्च स्नाद ने अर्च दिया नी में मू चर्याया चर्यार्थ्यान्दराष्ट्रेन्द्रियाया विसार्थ्ययान्दरायाहेब्रार्थ्यया वर्देस्य व्याप्त च्र-भ्राद्वीत्यामी तर्षु स्रद्याह तदाले सार्यान में म्याप्याम स्राम्यी तर्षे प्रवे र्वोश्वासिंदर्भः नवार्स्नेत्वरशामी होतायशान्य वर्षेत्वायशा वर्षेत्वायशानाः इतामी विश्वारिता की मात्रकार्य प्राप्त के प्राप्त क्विंदर्द्रियम् अयः क्विंकवः श्रीदः वर्द्देवः वर्ष्ट्रः वर्षः वरत्रः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वरत्रः वर्षः वर्षः वरत्रः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वरत्रः वरत्रः वर्षः वर्षः वरत्रः वरत्रः वर्षः वरत्रः वरत्रः वर्षः वरत्रः वरत्रः वर्षः वरत्रः वरत्यः वरत्रः वरत्रः वरत्रः वरत्रः वरत्रः वरत्रः वरत्रः वरत्रः वरत्रः क्रमायनद्यान्दात्यात्राक्षक्ष्यात् अर्वस्ययात्त्राक्षयात्रात्रात्रात्रीः भूतिः व्याप्यदान्नीयः विष्यात्रात्रात्रात्रा

े.शु.५.४.लुश.सैचश.५४.सूर.२८.सूर.शु.दु.सूच.ज.के.कैटश.२८.। यशश. र्केटमा यपर केटमायक्यास्ट अरले पुरेक्त स्वीयमा की विवास मुक्त हिन मार्स पर है वर्क्केद दुः सेदा धेद द्वर विंद वीय दुव र्द्धेवाय यस्य है व व्यूर आसर्वर दर र्ह्के वर्देवायः ૹૢ૾૱ૢૢઌૼ૾ઌઌૢ૾ૢૢૢૢૢૢઌૺૹૻઌ૱ૢઌૹૢઌૺઌૺઌૺઌ૽૽૱ૹ૽૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱૱ઌ૽૽ઌ૽૽ઌ૽૽ઌ૽૽ૼઌ૽૽ૼઌૺઌ૽૽ૼૺૡઌઌ૱ૺ ૡ૽ૺૺૺૺૼૺૺૹ૽૽ૢૼ૽૾ૢ૽ૼૹ૾ૺૼૼૼૼૼ૾ૹ૾૽૱૽૽ૢ૽ૺૹ૽૽ૼ૱ઌૺૺ૾૽૽૽ૡ૽૽૾૽ૹ૽૽૾૽ૹ૽૽૾૽ૹ૽૽ઌ૽૽૱ૹઌ૽ बैच हैं यो अन्दर्भे तद स्थायर या अन्ति। वद स्थवर अर यदे सेंद्र भे हुं हो स्याहिस गाँदे त्रकें नदे सूर नहून नायय में लिना यें सुरा नहीं या डेन रहा ही नेंदर या तुन हुं नाय ही हों न य सं र्केट्रिये सेवा यस दु चत्रसम् व्यंद्र। 🔳 🔳

যক্র

- च त्रुवःर्सुवायःयः विवयःग्रीयः "अर्वो नगमः द्वायः "बेयःद्वेयःयनुवाग्रामः । ने देः "अर्वोः
- ² Hugh Richardson, High Peaks, Pure Earth: Collected Writings on Tibetan History and Culture, London: Serindia Publications, 1998, p. 415.
- ³ Ippolito Desideri, An Account of Tibet, London: Broadway Travellers, 1932, pp. 93-102.
- ⁴ C. Wessels, Early Jesuit Travellers in Central Asia (1603-1721), Madras: Asian Educational Services, 1992 [1924], pp. 274-275
- ं व्रे.जी.श्रेर.ट्रंब.किल.रचन्ना की.जी र्ज्याचरनः २१।

वर्षेद् द्रम्म के देट है । आ मर्दे देव वर्षेट द्रम । धेन हिट विंद वीम देट स्मट विंद हेन र्श्वितः च्युः के तर्थे र शेरिः श्रीः र्क्वेयशः रेवा यदे स्वेरः तर्श्वेतः र्श्वेदः द्येदः प्वेदः पर्वेदः तर्थेदः तर्था विदेः दशेवाश नगर की र्श्वेट वाले हैं का देवाश की ही केंवाश भेता

र्रे अ'युष'रेट'युग्नरा' याश्चरपदः श्रें रः त्रोरः व।

दे'व'ई'WI

ल्. धु. चित्र क्रिय त्या भी मध्य माग्री अक्षय त्या यी क्रिय या में क्रिय त्या में क्रिय त्या में क्रिय त्या म અનિક નહિંક સુર્ અજીવા ખેર ક રન્ટ સેંકા સુક નવા વસે ને અરક ખેર વર્ષ વર્ષે ને વર્ષ चल्रेब र्षेत् र्योद राम्या विश्व भ्रुभःग्रीविंदःद्ःहेंवायःशुःवउदःयवैःश्लवःदवाःभ्रुमःवार्थःकेवःविंविवाद्युदःयेद। भ्रुमः मार्शे वर्ते वे मार्था पर प्राप्ते वे प्राप्त पर्या पर्या वर्ते विष्ता वर्ते विष्ता वर्ते वर्ते वर्ते वर्ते वर् ઽૈના^{ૹૢ}ૢૼ૱ઌ૾ૺ૱ૄ૽ૼૼૺૼૼૼ૱ૹઌ૱ૠ૱ૹ૾૽૾ૢ૽૱ૢૻૣૹૢ૱૽૽ઽઽ૽ૹ૿૽ઌ૽૽ઌ૽૽૾ઌ૽૽ઙૼૺૢૹ*ૹ૾*ૹઌ૽ૹ૽ઌૺ૱ૹ૾૱ टवा वी अह्रअःक्र्अःसु वाह्रस्य स्थाःसु रः धेटः सः विचः चस्तुवाशः वुशः दशः धेः अटः

क्ष्रिं भेरी तार्या वर्षे में प्रतिकार क्ष्य में स्वाप्त क्षा में प्रतिकार में स्वाप्त क्षेत्र का में प्रतिकार र्श्वेन'बुरस'म्बर्सकेन'देस'सर्न्,'व्यूराच'वर्श्वे'न्वेस'स'ब्वेम'णेद्र। क्षेत्रेस्वेम' ग्रीशात्रयाः भरासुत्रास्याः केंद्रास्यायाः स्वातः स्र्रीयः द्वीतः सान्दरः। देः नदः व्रियाः ૡુૼૼૼૼૼઌૹ੶ૹૢ੶ઌઽૹ੶ઽઌ૾ૺ૽૾ૢૢ૾ૺૼઽૡૢૺ૱ૢઽ૽ૹૣ૽ૼૼૼૼૼૼૼૼૼૼૹ૽૽ઌ૽૿૱ૹ૽૱ઌઽ૱૱ૹૢૼઌ૽૽૾૽ૢ૽૾ૢ૽ૼૼૹૻ૱ૣ૿ૢઽૹ૽ क्रुवःवहेंबःद्वेदःघवर्षःद्वेदःचलेबःर्स्या धेवःबःस्याम्बर्धःक्रुवःस्रुवःद्वाःस्रवः [पया हैया यो विंत् पुत्र क्षु क्षु र प्रक्रिया यो याईन अर्क्यश्र श्रुर याओं हुर य ने शाखा रेदे क्षुत्र क्वें अ क्वें कर द्वार नियम द्वार का क्वेंट यदि या क्ष का सूर अ या अर य विया यस्नुव प्यें र ર્ફેસ'લુસ'રેદ'લુળના'ય'ળાચર'ય'વ' (New Formalists) ક્રુસસ'ગ્રીસ'ર્સ્ટાર્સસ'સૂફ' दयार्चद्रायालेगायोदाउँदा। ५१२ दे दे र्हे अ क्चुदार्ये दिल्ह्या हुँ आ क्ची वाया अर्गेरा र्झेन्-याब्रेवा-सेन्द्र-स्परा र्झे सुवाव्यकावर्वोद्रशायाब्रेवा-वाळेवानावरुन स्नुन्रस्ता बै देवे विष्वाब ह्या रायर रायें दार्री

क्रैंयायायरुन्द्रे यादवर्येवे त्यादर्या वर्षेत्रे प्राप्त वर्षेत्रे प्राप्त क्रिया हो। दे है रैया'वादश'र्कर'स्रवे'दर'र्न्, र्हेस'रैया'वर्षो'र्कुवाश'यवे'सर्केद'द्वेन'रेवा'प्पेदा हें वाश्र

चरुन्द्रे महेत्वे निरम्पा के महित्य महिता है। स्वर्ष्य के महिता के महिता के महिता के स्वर् र्शायमार्चेतासी स्मार्टिस्सायमा वृत्तिमा रूपार्टीरमा . भुः तस्याः चरुषाय्योः चरायः विदायस्य । स्वाः स्व कॅंदाअ'हेब'क्रुब'क्रीहेंन'दवा'अ'प्येब'यवे'अर्दन क्वेंन्दाकें वावे'हेंन'दवा खे। नुस्य म् तिथाता मियोश की ही दार्थ शाक्षा तिथा तह क्षेत्राच कर दारी सीचा सूरी क्षेत्राच चडन्'हे';रु'चदे':ढ'दर्थ'भे':वो'अ'न्-रःर्क्ट्र'कु"दवा'रुथ'देवा'भेद'थ। चर्नेन्'अ'चुअ'र्श्वेद'ःवःहेन्'रम्'र्ह्हेन्'व्यादेहेद्र'चर्ने'चर्रःचेन्यवे चवर्षाव्यअ'विमाणेद्रा वैवाःवीकःक्कुदःक्रमः द्वेदः वर्देदः धवैः द्वुदः चः इस्रकः दरः चर्मस्राह्वीः इस्रकः हो। दिसम्बा ૹ૾ૼૼ૽ૼઌ૽૽૾ૺઌ૽ૼૢ૾ૢ૾ૼૼૹૻૻૢઽૻઽૻૹૢ૿ૢ૿ૢૢ૽ૡૡૢ૿ઌ૽ૻ૽૽ૢૢ૽ૺૹ૽ૼૼૼૼૼૼૼૼૼઌ૽૽ૢ૿૽ૡૢૻ૽૽ૢૼ૱ૹૹૹ૾૽ૼઌ૽ૻૹ૽૽૱૱૱ૢ૽ૼઌૹ૾ૢ૽ૣૺઌ૽૿૽ ट्यासदुः हुँद्राद्ध्यासायी यो यो सामुद्राहरू तथा क्षुयारमा साम्याप्याप्य श्चर त्या याहेश श्रे श्रे र वडी द श्रे श्चर हत। दे याहेश या वि र वे र या याहित वे श्वर र्बेट मी द्व सूट मी क्य अर्के व प्येव।

<u>-</u> ने'नर्भःक्षेत्रास्य नरुन्दे द्वार्य प्रत्येत्वा स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः स्वर्थः चयन् अम्बद्गः नदानुद्रः अम्बद्गः मान्नुकान् नुकान्मान्ने मान्या वर्षे अस्य प्रमुकान्य । ल्री अवतः द हे स्वया ग्री जे हेद मिलिस श्रूर वर से मामलुस मे दर दुः अरा क्षेयायायरुप:ग्रीयाययापदार्हेप:प्यायी:श्वायाप्यापे केयायायाः केयवे यावयास्यः सु यर्रेश र्थित्। क्षेत्रा भ्रुता है :क्षु स्रो द्युटः यम व्रुत्ते संस्था क्षेत्र : क्षेत्र :क्षेत्र क्षेत्र :क्षेत्र स च.क.क्.स.ब्रींट.धिय। क्षेत्र.स्या.ब्रे.टे.जन्त.क्रींया.क्री क्षेत्र.क्रिंश.योर.ब्रीया.ब्री.क्रिंस यात्राष्ट्रस्यायात्रास्त्रहेट्हित्। देशायमातुः स्त्रुप्तायात्राम् साम्यास्त्रात्रास्त्रात्रा यन्दर्। द्यात्र स्त्रात्वा स्तर्वे स्तर्भात्र स्तर्वे स्तर्थात्र स्तर्थात्र स्तर्थात्र स्तर्थात्र स्तर्थात्र स यने यने श्रीन मुस्तामु वर्देन याया याया याची वर्षे के क्रिक्र या मुस्ताम वर्षे वर्षे के क्रिक्र या महिला वर्षे वरमे वर्षे वरत् वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे वर्षे र्बेुटः श्लेपन्यः र्बेटः यानुदः याने यान्दः स्वानुहोर्हेन् याने यान्य स्वान्धः यान्य स्वान्धः यान्य स्वान्धः य ब्रॅंथ क्रुंद क्रुं क्रुंद स्माबिन घर्ष प्रदेश (क्रुंद स्मामहिन क्रिंग क्रेंप में स्ट्रंट हेंद) मलद क्रुंदायाद्यन्त्राम्यत्ह्रवायाद्याद्यस्य अस्यावित्रस्य स्वास्त्रम् यायर री. यहूर। अयर याजार याजाय कु. कु. यहूर हे. कैट री. वर्षे प्रवृत्त की की थी. ઌઙ૾ૺૼ૽ૼૡ૽૽ૺૹ૽૽૱ૹૢ૱ૡૹ૽૽ૹ૽૽૱ઌૺૹ૽૽ૢ૽ૺૹ૽ૣૼ૱ૹૄ૽ૣૼૼૼૼૼૼૼૼ૱ૹ૽૱૱ૢ૽ઌ૱૱ૹૡ૽૽૱ૹ૽ઌૢ૽૽૽ૣૼઌ

Excerpt from "Notes on the New Formalism," copyright 1992 by Dana Gioia. Reprinted from Can Poetry Matter? with the permission of Graywolf Press, Saint Paul, Minnesota.

ब्रेन्यवे क्रिंब क्री क्रेंब्र पॅब्र वर्हेन्य वव्याय ने त्यश्चुर वस्टेश क्री

स्टर्श्याञ्चर हमाने देश्यायस्य ग्रीस देस स्वयं ग्रीह्या स्वयं क्षिया धीर हिसा धीर मेवैःमञ्जूमसःसुःवर्ममसःमःहैःदेवैःर्सूदःवर्सूवैःकःक्रुदःधेद। स्टर्ससःसूदःदमः मीशासहन चुत्रे हमसावश्चारमे वर्दे सन्यासर—सून स्वार्टे साधीन न दे वर्दे समे ર્ફેક્ અવે સુક દવા ૧૮ એ વર્ગ વર્ગ સ્ટર્સેએ સુક દવા અદ કે વર્ષ સુક દવા વી એવા વેષ त्यः अर्द्रवः ततः भी मीते : क्रेंगा अर्वअवायः ५८ : दें ५ : मुद्दा केवा खू मते : दुवा मी अर्थः वि श्चेत्रः स्वा द्वियावायायात्रे देवे स्वा देवे त्यो स्वत् देवे प्रत्या स्वा दिव प्रत्या स्वा त्या स्व बै स्टर्अस सुद स्वाप्त र्स्ट्रिस र्स्ने अर्थे र का उत्तर के कि सम्बन्ध है। अस्य स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त श्रभ्यातदुःक्रुयोशायत्रर्भे ग्रीक्षिराजान्ना,योष्ट्रभाषान्त्रम् । स्रोत्तर्भे स्त्रीहर्भाक्षी,ययदर $2 \times 2 \cdot (1) \cdot g_{-1} \cdot (1) \cdot g_{-1} \cdot$ रवर क्रूरे व्हूर क्रीश वर्के र वाशर तहूर हुए ता चोड़ वार्थ शं वर्ष वर्ष तहुर रश्चेयाश्वायश्वाः श्रुं व्याक्तियः देवः वरः दः पश्चराश्ची

चःप्याञ्चीःवर्त्रः सूर्यः (क्रॅग्नान्तरः वीर्च्याः अः द्वाः ग्रथः विद्वेः क्रेः वेद्वेः क्रेः वेद्वेः यः दरः । हमाशः & वदैःवदः नदः ७ वदैः भ्रः चुवैः अर्क्वेवः हमाशः वेदः श्चेदः चुदः य। माशवः चुदः สิ : a ธิ : a ธ विंदः नी से कें के कंदर व्यावदे वद्वे घनमा वस सूर्वे नमा सूद्व सम्बन्ध रामा नी सदावा शुचा पुरा गुरा मा बुद : चुद्रे : इस्त न म्यू द : इन सा चुरा : क्षेत्र : सा स रटार्थेशःश्लेषः ट्यां यो बटार् र्वेवा चुट्टें ट्रंशःग्री क्रें या यो श्लेया द्वीयशः दे अष्ठबः द्वाःश्ला क्षे ख्रुवा देश या नर्वो राह्य उद्याधित पार्वे राह्य विवा स्टार्थे राह्य राह्य विवा क्षेत्राःभूताः तृःचर्गोनः प्रश्नूरः ग्रुशः दःनेः यः यशुरुः यः क्रेदः ये विषयः। नेदेः क्षेत्राः यो वार्षेनः शक्शभः देशभः कूर्यः शतुः सैयमः तामः योषयः वियाः मृत्यकुरः । (क्रेयामः ययदः स्वयः स्वाः र्श्रमः वादश्यायाची । स्टार्श्रशः सूदः दवा वी अर्थेदः द्वा वर्षेश्राया देशः स्टार्श्रशः सूदः रचा.रट.रचा.म्या.मेर.क.चोश्रेश.यर.जा.चिर.विचाश.त.लायो वर्तेजा.कश.चोश्रय. . ह्रव चैर.य.लूशःश्ची ऋजाताःवियानाः मुष्टे ह्रायनाः लूट्। १४४८ व्यूमःयान्यम् ह्रव हिरः चव भोगावत्रे वसुवाक्तान सुर द्वीयायवे तृषान्त्रयामांवार्स्ट्रीत द्वारायवे स्थापार्थे स्थापार्थे से रम्बर-दर्भन् वयः स्टः श्रेषः श्लुवः स्वा-दर्भाष्ठ्यः क्रेवः र्थः बुद्धः यः दे है श्लेषः दयस्त्वेयाः लुरं जराश्चा कुर्या चीरार हुर ची. यसी जाकरा तर्म सी रात्या चीर खेचा ची. सी. सूरा बैराजशास्त्रीयाचिद्रार्द्रशालाश्रयाची शहराबैराहासी विधित्री स्राप्तास्त्री शासासी इस्रयाण्चीयाचेदयाद्वार्येरान्नान्नाः व्यवाद्वीताच्याः व्यवाद्वीताः स्व

रटार्शेशःक्षुत्रः दवाः र्वटास्राराङ्केवाशास्त्रस्यस्यानाशयः ये स्रोदः सूचराः देःयः

इ.चयु.चु.च.वर्चैराच.चु। र्था.चार.खुचा.रर.इ.क्रेप्ट्यु.क्रुचा.श्रह्मच.र्बेर.त.ट्र. धीद। क्रेस स्टायदे प्रतास्त्र सुद्धारमा हुस्य सामा क्रिया मिरा से से से हिंद सी से सामा सी सी सी सी सी सी सी स (रह्मराबाक्षेत्रसुपुरुषु स्थेषारमा . . . क्षे.सुर्वे)

ॱॸ८ःश्रॅक्षॱয়ॢढ़ॱ८वाॱवीक्षःऋँवाॱॸ्रॅदः ॸ्रॅॱक़ढ़ॖॺॱॶढ़ॱॼॖऀॱॸॖॆॱख़ॗॖॱड़ॖढ़ॖॱॵॱॹॢढ़ॱ८वाॱ लन्ना नम् । स्रिन् द्या क्री मर्से वा स्त्री वा स् श्रुंशःश्रुद्गःरमःम्द्रियाःमे क्रियाःमक्रियाःमक्रियः स्रुद्धः स्रुद्दः स्रुद्धः स्रुद्धः स्रुदः ट्याःश्रायदः स्ट्रायीयाःगुटः स्ट्रायीः क्षेत्रः क्षेत्रायीः इ.चीत्राग्रीः क्षायां अर्थश्रयः क्षेत्रः श्रीयः श्रीतः श्रीत क्षीं मात्रका प्येत। र्हे का देना मी र्झेंका प्येत हें ना सामका सदा है नका सदा हो का स्तार हो नका सदा हो का स् इ.वेश.ग्री:श्रु:अर्क्सश्राश:र्क्केंट्र:हो। द्येर:द। द्य:रवश:हे.व्ये:दर:वा:अ:रेवे: ळेथः শ্লব ন্যাল তেওঁ ন্যালী সম্প্রেষ স্কৃত্র স্কৃত্র William Carlos Williams धेयः นรูมมายา "นุฐรานุสัมรณะนั้" (The Red Wheelbarrow) ฮิมชาริ: ब्रैंशयारकुंवर्रभगक्षाक्रियायाया

> so much depends upon a red wheel barrow glazed with rain water beside the white chickens

*ॼॖॱॸ॓ॱॸ*ग़ॸॱॲ॔ढ़ॆॱॡॿॖऀॺॱॺॖॱक़ॸॱक़ॖॺॱढ़॔ॸॱग़ॖऀॴॱग़ॖऀॴॱॿॖऀॸॱय़ढ़ वर् नःविंसन्स्रस्येन्ते त्याहै वर्षे स्यामे विवासहेत स्थेन

श्चेत्रमायने से संस्थाते हो त्यायनुस्य नियते सुरायक विवादी स्वामार ने निया मी बर्न नुर्मेया या से त्या क्रुश र्यो न स्वी मिर्म में मिर्म क्रिश स्वा स्वा मिर्म स्वी मिर्म स्वा स्वा स्वा स वितार् देवित्रचर मुक्तामारकी स्रेश्रास्ता वर्षेत्र स्याची मार्श्रास्त्रस्य साम्राज्य स्व . त्राच-प्राचित्र के त्राचित्र के त्राचित्र के त्राचित्र का क्षेत्र के त्राचित्र का त्राचित्र का त्राचित्र का त মান্তমা:মার্ক্রহেম:মীর।

> To be or not to be that is the question Whether 'tis nobler in the mind to suffer...

यात्रवार्ययम् स्थान्य विष्यान्य स्थान श्रुशका.पूर्टर.श्री.टथ.ग्रीका.योज्ञुम.च.ला.मचका.लुथ.यथा.लट.ये. . . .

Williams धैसःसुनुतर्देरःचवेःसुत्रःस्म (blank verse) द्वैसःमेःस्टक्षेदःसुत्रः दमानी हैं अ' खुअ' मुश्रर माश्रर मानि मही दुन अपन्य खेब 'यर हैं अ' य' देश विंद नी (क्षुत्र-द्यानी) भून इस्रमः (यार्नेवामः र्श्वेदनीमः वस्रमः विवादीनः नुः यहवादायः। बुबाओन नुः क्यूरायदे देशायाओन्। बनायमायायनै याशामार्जे बार्मे नावन महिला अह्यर द्विय हो। दर ये दे। क्रेंगश यह द स्नुहर त्या या ही दे दा हो हिंद द इदे तुषः तृषायः नदः विष्ययः द्वायः स्वेतः विष्यः विषयः व श्चेत्र त्या यी सः यदे श्चेया सूरका है स्रीया श्वेष उद्गर धीदा विद्या यी " वद्ग विद्या स्था स्था स्था स्था स्थ त्, हे.स्ट.ज्ञूशक्षेत्रस्याः धे.दर्बीस् ब्रीस् व.शूब्रः धे। स्रीयुः स्वरः यो.क्रीयः जीवः रटार्श्रशःक्षेत्रःटयाः मृःश्रुरःयः धेता

so much depends	হুন্
upon	হুন্
a red wheel	करकुषः
barrow	वेदायीयायीयादीदायवे
glazed with rain	वडुद'वर्वेदः
water	द्रअद्योदेः
beside the white chickens	द्दे त्य हुते । स्टार्स हिमानहेब प्लेंड्

वर्देस्ह्रेन्द्रमात्यः (क्रेमायस्ययात्रीः) र्नेयम्यामयर्यानेमात्रुद्धार्थेन् हेरा `र्ने`अनुअ'ने`_{र्क}'चर'से'वेर्चअस'न्''ਘर'र्ने`अनुअ'सेन्'पर'वर्हेन्'घनस'सेन्'ने्। Williams ધોશ્રાસુત્ર દ્વા નેલે દેવ દ્વાન્યાન રામુશ્રાને તેના હિંયા સેને સ્થાન સ્થા व्यत्याचीत्रायते प्रतावित हेना हेना सम्प्रत्याचीत्राची स्वापिका वा नुस्रीमाना त्रा यञ्जीयाबारपदी:श्लेष हें अरदेश दशेयाबारप्रथा है प्यटा साधीब पदी श्लाकुव दें रा चवः श्लेषः स्वाः नीः धीमा खेरः महिषा चें नि। व्येना यः चेंवेः श्लेषः स्वाः मीः शक्ष रहेनः त्यः र्केथः(वृज्ञ्ञराञ्चर क्रीवेंज्ञायरे स्टार्केशः स्नुदारमा ने क्यूचार्चे। Williams धैः स्नुदा रमा वर्ने व्यक्ष महें न समार हिमा मीका हो र महर मी ह्यू र रमा मीका हो र मवे स्थेन हैं अ र् यह्रमायाने र्राप्ता केलिमार्मि अञ्चरायते र्ह्हे प्रीकाप्यम् सूर्योमार्गिकायाने त्रका हुद्द्राच धेरा अर्ड र ह्वें श्रेन यदे करे धेरा श्रुर द्वा परे देवारा श्रुर ह्वें राहेन नगतः 'सुम्बर'' (minimalist poetry) य'णेर्'र्नर'त्र्देब'स्याबाकुर'चरे कुःसर्वः मुँच,त.त्र्य, श्रीर पूँच,यी, श्रीयश.श्री. ४८. यी, ह्यो, श्रद्व, ययो. क्योश.श्रीय. र्क्षेन् व्यावक्षुरावामित्राचार्तरा Williams धीर्म्यूकासायः सुरासर्देन पवे माञ्जूनाया निर्माता मान्या मान्या

Williams धेशःर्त्तुम्यःर्धः द्वरायः यः देदः स्वरात्तुः वहेमः हेदः हेदः यः यः स्रहेरः स्रूदः याश्वरत्त्रं विष्या अर्हेट्टर् तह्वा यदे त्यश्च स्वाहेट्ट्यो यात्रवाश वर्द्ध की व्याध्य स्वाहेट्ट्यो ॱॳ्र्याः ह्र्यः त्रम्यः अपाः भिः अह्यः क्ष्यः कुषाः विषाः विश्वः भः नः हो नः त्राः त्राः की नः विष्याः याययः। त्तं विवाहित त्र स्तुका दका हेद ही स्पेत्। इ. पदे सामक दुवे होत स्वाहित हे ने स्वर हेद ঘ্রবন্ধ মৌ দুর্নি

§

८.४८.ची.क्षेत्र.८चा.चु.८४.वश.ल८.४८.श्रुच.२८.क्रुच्याचानकरे.चाधुका.चा.चुका.स. थोत्। र्हेसात्युकान्तेन्त्रेत्रात्युकार्हेसात्युकार्हेवार्युकात्यासी नर्वोकायते वेद्यायहस्यकात्रीः द्रुयायान्द्रा वर्हेनावि। न्युद्रशायवींशार्श्वाशार्धेद्रायादेश्वरायाद्रायाद्रशा भ्रम्य ने स्थाने स्थान स्थान के स्थान स्था र्क्रेस'त्युस'डेम'र्क्रेस'व्य'सू'न'हे'मार्सक्य'न्'व्यूह्रम'र्से क्रेम्स'नरुन'सूद्र'टम'द्रीस'द दवैः स्टार्धेशः श्लुष्ठः स्मार्देषः याः मार्लेयः लेदः माष्ट्रः याः यद्वैयः नः याः यद्वैयः नः याः मार्लेषः द्रु रटाश्रुराःश्चर्यः द्याः द्येशः यादेशः दृष्ठे द्याशाय ३५ ःश्चरः त्याः योः हेर् ः त्याः युवा द्वेता द्वेरः देरः भ्रम्याग्री भ्रम् प्रमास्य स्त्रात्राय स्वर हो।

<u> रश.चक्रेश.थ.२.२४१.चक्रेश.तषु.जू.चर्बेज.</u> र्थेन् र्हें अःनेवाः क्रेंब्र व्येंब्र हेंन् अवब्र द्वरायाः क्रेंहेंन् वाले हैं क्रेंवायाः शुःवरुन्यः न्दः नेवेः ઢો[.]શ્રેઽૄૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૢૹ૽૽ૢ૽૾ૢૼઽ૽ૣઌૢ૽ૡૢૻૺૹૢ૱ૹૣઽ૽૱ૡ૿૽ઌ૽૽ૢઌૢ૽૽ૣૹૢૣ૱ૹૼ૱ૡ૾ૻઽ૽ૹ૾૾ઽ૽ૢ૽૾૽૾૽૽૽૽૾૽૽૽૾ૢ૽૱૽ૺ ર્ફેસ'લ્યુસ'નૄ⊏'રુદ'ર્ન્','વફ્રુસસ'ર્જેન્|'ય'રે':વાર્દેસ'વદેં'ક્રેન'ફ્રુન'યર'સે'વર્દ્ધુર' र्हे। र्हेशः वयशः वाद् विवा वीशः ग्राटः श्लेषः द्वाः श्लेषः वेदः व्युवः यः वर्षे वा वयशः श्लेदः यः वलेब द्रुष्कुव र्ये म्यूव द्वय यदे देश य । भर को द्रुष्ट्री विंद्र गुर्विषय योद दर्गेश यः <u>बुचा.जा ज्यू.क्रींश.क्री.र्टेश.सैचश.दुश.१४ क्री.४८.र्ट. ह्यू.१.४घचश.उचांव.५.चुर.</u> र्श्वेर नाहेर नावें।) शे विद्यार अपर सुद हें अ दी हें र नाहे वे से स है के नवें। इस्रायन्ता महित्त्येन्यवे सूत्रहेंस्य कुर्डेस कुर्स कुर्स कुर्स कुर् दर्भाषीत् के सामुद्रा मुद्रा मान्या म रटार्बेटावर्षेयो चर्चाराष्ट्रीं वश्यावर्ह्स्याविद्यायस्य वस्त्रीयास्त्री सेटारा वर्देशःसवःश्लेषःस्वाः—क्रॅमशाम्बरुनःनदःस्टार्श्वशःमादःसुदः—मीःधीमार्थेदःमीःश्लेषः र्कन् डे र्ड्या प्येत्। याया यात्रन् रहतः श्री हे न यात्रि है हें या सून्या ही ह्या पाने से या प्येत यम् द्वाप्तम् कृत्यम् कृत्यम् द्वाप्तम् द्वापाद्वाप्तम् विष्यम् विष्यम् विष्यम् विष्यम् विष्यम् विष्यम् विष्यम् यदे ह्यें पी क्रें र पी व द में वा

यादशः स्नावरु देरदेर रूटः यो छा सेवे सूद रया यो यादर देव इसरु हे यारुव द् वसूरा मन्दर्देन देनमनी सन्दर्भन में हेंद्र के माहे लग्दर्भेर महिरा महें च.चर्ह्-र.त.यु.श्लेष.टच.जा.यु.यु.ध्रेच.श्रट.च। स्ट.श्रुश्रश्च.चर्ह्-.तयु.श्लेष.टच.ची. देवाश ४ वर्ष विशेष १ मानि है वर्ष विशेष हो स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर्ध स्वर स्रहेश देवा देवा वर्षेत्र स्रो द्ववाया देवा स्वरूपी सूत्र दवा वी तर दु द्विद्या वर्षेत्र चगावा सः चरुरु। र्हेवा वहें सः रहे स्त्रीः वादुरु। सूर्य वर्षे दे वादुरु। रहे से विकास क्री. ह्रेश सेंटल सींम योश दीर ता प्रियम सहर। योधेष.मू.योखेष.स.लट.उर्चैट.च. रुषःर्केन् वित्रयानाष्ठ्रवः यो नामः विना या नमेवः सूर्वययः के ना सूर्वि यम बें में राया कया .वर्धीर.स् 🔳 🔳

श्चिर:शियर:ग्री:शकर।

- ा यहै है 'माद्रय समक्षामी 'यहेयु 'भे हो 'सेमाक 'या मेर्वि।
- 2 न्द्रीद सीमानी मायायादी न त्या के त्यूरी कुट त्यूरी देनाया माद्रीया सीमानी मायाया के सार्वा के सार्वा के सार्वा याश्वरः वहें द्रा द्वी: भ्रावशः दरः। श्रे श्रीरः दरः श्रायीरः श्रेषाशः वर्द्वे: श्रावशः वर्षायाः स्वीः यो। <u> ५८:सॅ:५े:के:वर्षे:ग्रे५:५मेंब:स:बेबा</u>
- श्चेत्र प्रचा क्रें वा मिर देवे अहवा हु र चुर्या वायायार सुर वी श्वा कुर थे सुर देवें या या देःयः वे बिरा Williams धैशस्य वी क्षुद्ध र्हे अ दु दे दे र द शक्रे वा वी र या वार्षे सक्तरा ग्रीट प्राथम स्विता तसूर पर हो। र्हे स स्वता राज्य स्वता स्वर स्वता स्वर स्वता स दयारचुद्रात्मानी सुद्रास्ट्रां सुवार्या स्वार्यात्मानी स्वार्यात्मानी स्वार्यात्मानी स्वार्यात्मानी स्वार्यात्म

तर्यायरीयाग्रीयायश्चीर।

हेकहें आ



देवार्टेष (Dana Gioia) (१९४० वॉरविहरमा) कुवानी র্মান্ত্রমান্ত্রমান্তর্মান্তর্মান্তর্মান্তর্মান্তর্মান্তর্মান্তর্মান্তর্মান্তর্মান্তর্মান্তর্মান্তর্মান্তর্মান্ र्डें अ देना र्सें द र्पेंद हें द : अपदा र्सें प : नोर्से प : लेवा : पेंद र्टे चर्रे भृते के देखा विद्यानियाला के के प्राप्त के के देखिया यी वहें ब 'ब्रेंट' न्ट' रे अ 'ग्रीक 'वग्न 'वहें ब 'गर्ने ब 'यवे 'वग्न व व्युर्क्ट र् क्रिं अ वर्त्ते 'वाबर'। विंदः वीश हो ब रेरः र्श कें र वर्त्व वह वाहिश वा

यमान्त्रीत्रात्रायान्। देवे वित्रात्रायान्। विवे वित्रात्त्रात्रीयान्त्रेमान्त्रेमान्त्रेमान्त्रीयान् त्यः मूर्याप्यत्यः त्रे निर्देश्वरः त्रायः मुद्दार्थः विदः त्रीयः सक्र स्रे निर्दाण्यायः स्रोतिकः त्यः र्ह्रसः वर्त्ते नाम दः लेदः। देस मीका विदः व्यः र्ह्रसः देना मी सूम नाम क्रम हे विद्या मुखा

१९९२ वें द्रश्विंद्वीयः स्टावी ययाना विवादयः के दावित्र ही हैं अर्थे र्थे स्ह्यू र

द्रुष: "हेद:सुर्-मो दे हेंग" (Interrogations at Noon) डेश:य:य: 2002 वॉर: জে-ইর-ব্র-ব্র-ব্রান্ট্র-ব্রাব্র (American Book Award) ब्रेश-प्रते नु-द्रग्रवर्षेत्। विंदियोबादातुदाया है बाददाखी तायी यह सामन् में माही पाय करा ही स्मादा करा श्चर हें अप्येन हुन्। २००३ व्यं राष्ट्रा देवें सर्हेन सही अंश हो साहिता $\widetilde{\mathbf{w}}$ द्भः $\widetilde{\mathbf{w}}$ $\widetilde{\mathbf{w}}$ याङ्क् यहूर्य दे यस्त्रे यथया यायटा किया लूटम स्त्री क्षया स्याम स्री प्रक्रिय क्षा साथ ला मुणा स् વર્ષેતા શુ. ક્ષ્યું ફ્રેલા શુ. ક્ષેતા શુ. ક્ષેતા શા. કાર્યા કાર્ र्स्यायाः श्रुरियः द्वीतः यावदः योदा

वदैरम्मेंद्रमवे र्रें अप्येन वदै है हे वें प्यायी स्नूद्रम्म अह ही द्रो देव [™]શ્ચुब:८वा:२१:वा:वा:वादुर:ॲर:५३४३ શ્ચुब:८वा:५८:७४:३३:३वा:वाबुर:ऒ्चॅर:र्हेअ:ऄवा: ষ্ট্রবাম'বমুমা" (୨၉၉২) (Can Poetry Matter? Essays on Poetry and American Culture) ब्रेश्यन्ते प्रशासिक दुन्तु विदानी र्हे अप्येना वदी खा इंद्रे क्रे ब्रिन क्ष्यक्री रेश नेवाय ह्य स्नवश स्वापाय हा क्ष्य अप्राप्त क्ष्य हो स्वाप्त हिन हो स बै-तुष-देव-देवे-व्याक्कुश-र्षेवा-वा-र्हु अ-योवा-वा-त्वेवा-वा-प्य-प्युट-खेटा। र्हु अ-भ्रमा देश क्रिया हुँवै होट या देट स्वस्य सेवा मानुस मी दर दुः ह्यूद स्वा मी मी प्रव ग्री छद या ફેર્ન જ્ઞુન નો સે 'સુ 'સુર્ય' ક્ષુત્ર ન ના ત્યા ના ત્યા ના તર ને પોર્ટ ન સ્થ[ૃ] કે સ ન વે 'ફેર્સ પોના વર્દ્દે સ' ૹૻૣ૽ૣઌૺૹ.ઌૹ૱ૺ૽૾ૹ૾ૢૺૺૢૼૹૺ૾ૺ૾ૹ૾ૢૺૺ૱ઌઌૺ૱ઌૢ૽ૢ૽૱ઌઌ૱ઌઌ૽ૺ૱ઌઌઌ૽૽૱ઌૡ૽૽ૹ૾ૺ૱ઌ૽૽૱૱ૺ श्चिं न ची कुष श्चार्या ची पर र विषय अत्रव श्चिष र यो श्वाय र व की स्वार्य श्चिष स्वार्य की ब्रॅवे: न्नो:ब्रॅव:ग्री:नम्नन:द्यांवं दरःश्चद:स्नाव्दे:म्बेद:धर्न:धर्न: श्री:स्वनःकी ब्रोकः `र्ने:बूद:बुेन्:पवे:नुस:नेव:इसस:ग्रीक:क्षुद:दवा:वाहद:दस:से:बुेट:व:न्दर:। क्षुद:दवा: मी दुश देन दर दरे देन र्स्नेन अपन्य ही मार्थ वर्षे र दुर हर हर है व वर्ष नरुष वर्षे द् <u>૬</u>..ત.નુ.વહુટ.લેવોશ.—ટેનુ૨.ધ.ક્રેથ.દવો.વર્સિવ.ક્ર્રેય.ક્રી.ફ્રેલ.તા.ન્યુવો.ટેશ્રુશ.ત.કો.વે. —याक्चितः र्श्वेरायहदा ये प्रारम्भेदायहेर हे प्रारम् उदायहिषा गार्थेया ये रा

हे बहू ला है किया है है है सब बारे सम्बन्ध की समानी बार है किया बार कर है र्जुन र्ज्जूर नरुष सुर मार्थ मार्द सावद लिया हु रें रा वहेंद रें रा विवा ग्रार लुब.ब.लट.ब्रिट.स्ट.ब्रीश.स्ट.ब्रुश.झैब.टचो.ग्रीट.उर्चे.जो झैब.टचो. यावर म्रीयावर्ष्ठययार्क्रयायावर्ष्ययायवे रहेयायुयास्त्रास्त्र हो वदेरा मुं रावर्ग्र नुमार्भे रायते हें साध्येया वर्षेते सरा दुर्ग यात्र रहे रायात्र रहे रायात्र यात्र स्वर



Ideal of a Tree

by Ju Kalzang

If in the spring my gush of fair blossoms Were to adorn the beautiful tresses of our older sisters, Though tear and fling they might with incisive fingers, I would say, without remorse, in the expanse of great impartiality, Let them adorn.

If in the summer my dense arbor spreading a country mile Were to shelter from the heat our older brothers resting, Though mercilessly subject my leaves might be to the torrid rays, I would say, without discontent, in the expanse of great tranquility, Let them shelter.

If in the fall my ripened fruit bowing low in heavy clusters, Were to offer a little nourishment for the health of our grandmothers, Though cut they might at my neck with sharp-bladed sickles, I would say, without regret, in the expanse of great happiness, Let them nourish.

If in the winter my branches stretching impartially Were to offer a little warmth to fuel the fires of our grandfathers, Though chop they might with razor-sharp axes, I would say, without demurral, in the expanse of great patience, Let them warm.

Above all, if my towering treetop which touches the sky Were to be a ladder for the enchantment of our young boys and girls, Or serve as a footstool for them to pick a garland of stars, I would say, "Delight in this gala. May your wishes be fulfilled!"

Translated by Lauran Hartley



Ju Kalzang is one of the most widely acclaimed Tibetan poets today. He was born in 1960 in Dar lag (Dari) County, Golok (Guoluo) Prefecture, Qinghai Province. After earning an associate's degree at the Central Nationalities Institute (Beijing) and a master's degree at Qinghai Nationalities Institute (Xining), he returned to his native home in 1987 where he now serves as director of the Nationalities Section of the Golok Prefecture Translation Bureau.

The poem "Ideal of a Tree" was first published under the pseudonym "Tig ta" in the literary journal Sbrang char, no. 3 (1987): 78. It also appears in Ju Kalzang's collection of poetry, Mind at the Foot of the Snow Mountain (Gangs 'dabs kyi sems pa), Xining: Qinghai Nationalities Publishing House, 1994.

र्धेव पतं प्रमाय प्रमाय

<u>- ৫६:শ্রুঝ:বর্হ:মীঝ:বস্কুয়ঝ।</u>

षाः भ्रेतः नृतुः त्यां सहिषायते क्वितः कर्षसाः प्रेतः नृ। बःक्टरक्ष्रस्थेवे अर्द्धवः <u>च</u>ीषः क्षाः नः सुः वयद्यः ग्राटः ।। वर्क्केन् सेन् यहर ह्यें सम्बन्ध केन सेंदि या वि निवेद सम्बन्ध यहर केंग

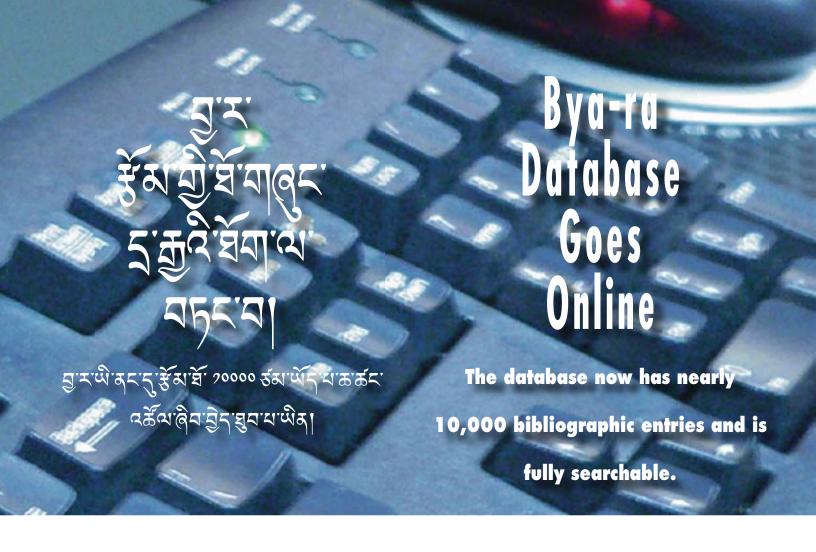
रचिरःयोश्रेयःश्रेयःक्षेयाःलजायर्यःर्तयाःक्राःर्वेशःयशा षाहेदैः भ्रुः दयः वार्थः नदेः कदः भ्रुं नः दयः पेटः द।। *ॱ*कॅ:मार्ट्र से:र्मा:र्मा:र्मेश:मञ्जे:सेट्:र्माबेर:प्यटः।। नभ्रम् से दिले पाके से पेरि मिले दिन्नी मार्थ पान महिले म

ब्रेंब.योबीय.ब्रीब.जायोग.उचेन.च = ८.तट.वीट.टी.टी. तथा। र्क्के चित्रे चे सन्दर्भ मार्के चर्चे चर्चेन खेत्र खंद्रा खेट द्वा। *ৡ৾৽*ৼৼৼ৾৾৾৾৾য়য়ঀৢয়৻৾য়য়৻ঽ৾ৼৼয়৻য়য়য়য়ঢ়ঢ়ঢ়ঢ়৻৸ यरश्योदःद्यायः चळेषः येते याले द्यीरशः सुः चहरः केंग

- दर्गुद्र-वार्युक्ष-प्रयान्तरे वित्यनाः र्युवायाः क्षेत्र-वर्गुद्र-वर्ग्यन्या। र्श्वे चेंदे से सूचरामार्थे चदे चेंद्र त्येद रस संदर्भ ৼৢ৶৻৶ঀৄৼৣ৻য়ৣ৻ৼৼ৻য়৵৻৴য়৻ঀ৾৻ঀ৾৻৶৻৸ঀয়৻য়ৼ৻৻ यम् सेन् पर्वेन् यः केम् येवै म्वि न्वी न्या स्पन्न र केंग

विर्तासरम्प्रतायतुः झे स्रास्त्रभाष्ट्रायक्षेत्रीयास्त्रभा बुःबुदःवुःकंद्यीयायदेःब्रुयान्दर्दुःब्रुदःहो क्रुं:स्र-१५वयः ये दः पदे सिर्मे व्यव्यात्त्रे यो व्याप्ति व रे ह्वें यहिर दश कें अपि दे निय हें द त्या रे ता द हो।

सूत्र हें अवदे चेदरा दर येंग १९८४ वेंदे सूर कर तर्र्य हरमायाश्वरायदे र्व्या मारमा ४० मी सेराया नर्गोर्-र्र्भर-डेटा रेवे हेबाबु १९९७ व्यटः "ह्युब-क्री ञ्च-दश्च-त्रः" (यर्के क्र्रें ये ये प्रेम्याय दशे सूर्य । वरः ।) लेश.संदुःर्श्व्याचित्रश. ४० २८.। श्रैथ.त्यो.सं.दर्नुदुः श्रेषः ह्र्याः ह्रीयायः नश्चीयायः । । यारयः यर्यययः ग्रीः श्रेयथः न। (त्रक्रू.क्र्य.शु.रचीय.रनु.श्रीय.विर.) ७७७०) लु. र्वेवाः व्राप्तः ३—८ वरुषः शुः वर्गे ५ : व्ये ५।



"चुःर। वॅदःरेन्यायदेन्नियःदह्यानीः ईस्याध्यार्धात्यन्द्राः । विश्वः २००। नियायः देन्यः प्रायः दिन्यः प्रायः देन्यः प्रायः दिन्यः प्रायः विद्यः प्रायः दिन्यः प्रायः विद्यः विद्यः प्रायः विद्यः विद्य

Bya-ra: A Tibetan Research Database

(Version 2.0), previously only available on

CD-ROM, is a resource tool by which

Tibetologists and other researchers can easily
familiarize themselves with secondary research

by Tibetologists in the People's Republic of China.

प्रकृतःर्वेयाःयोः मुनः www.latse.org/byara प्रकृतःत्रेयःयोः

The web-interface version is available for public use at: www.latse.org/byara



વા જ્ઞે 'નવા અર્દિન 'વાન વાને 'તે 'ગુત 'ધત કેવન 'જ્ઞ કેવન પારે 'વાન પારે 'વ